नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 323, नई दिल्ली, गुरुवार 22 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

02 खराब दिनचर्या का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

06 विज़न 2047 और भ्रष्टाचार - मुक्त भारत का संकल्प

08 पर्यावरण संरक्षण कोष: जवाबदेही और पारदर्शिता का मॉडल

सड़क पर हर गड्ढा, हर खुला मैनहोल और हर अधूरा निर्माण कार्य एक संभावित मौत

भारत की सड़कें, प्रशासनिक लापरवाही और जवाबदेही का संकट

संजय कुमार बाठला

विकसित भारत 2047 के सामने खड़ी एक गंभीर चुनौती ? भारत में सड़कों पर गड्ढों, खुले मैनहोल, निर्माण सामग्री के बेतरतीब ढेर, अधूरे अंडर - कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट्स और प्रशासनिक उदासीनता के कारण हर वर्ष हजारों लोग जान गंवा रहे हैं या स्थायी रूप से अपंग हो रहे हैं।

क्या अधिकारियों और ठेकेदारों की लापरवाही की सज़ा केवल जांच और मुआवजे तक सीमित रहेगी ?

*** आंखों पर परसेंट का कवर कब उतरेगा ?**

विकसित भारत 2047 का लक्ष्य केवल एक राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि बुनियादी ढांचे, शासन क्षमता, नागरिक सुरक्षा और जीवन गुणवत्ता में आमूलचूल परिवर्तन का वादा है।

लेकिन इसी भारत में सड़कों पर गड्ढों, खुले मैनहोल, निर्माण सामग्री के बेतरतीब ढेर, अधूरे अंडर - कंस्ट्रक्शन प्रोजेक्ट्स और प्रशासनिक उदासीनता के कारण हर वर्ष हजारों लोग जान गंवा रहे हैं या स्थायी रूप से अपंग हो रहे हैं।

यह विडंबना नहीं, बल्कि एक संरचनात्मक विफ़लता है, इसमें माननीय नेताओं की समय समय पर विपक्ष पर की जा रही टांटिंग बाज़ी

* 10 से 50 प्रतिशत वाला मामला

* अधिकारियों कर्मचारियों संबंधित लाइसेंसिंग अथारिटी द्वारा आंख मूंद कर बैठना

* आंखों पर परसेंट का कवर चढ़ा देना

भारत की विकास यात्रा पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती है।

नोएडा में 27 वर्षीय इंजीनियर युवराज मेहता की गड्ढे में गाड़ी फंसने से हुई दर्दनाक मौत ने पूरे देश को झकझोर दिया।

सोशल मीडिया पर यह मामला ट्रेंड कर रहा है, क्योंकि यह किसी प्राकृतिक आपदा का नहीं, बल्कि मानवीय लापरवाही का परिणाम था।

इस घटना के बाद सोशल मीडिया पर नागरिकों का गुस्सा फूट पड़ा, लोगों ने सवाल उठाया कि क्या टैक्स देने वाले नागरिकों की जान की कोई कीमत नहीं है?

क्या अधिकारियों और ठेकेदारों की लापरवाही की सज़ा केवल जांच और मुआवजे तक सीमित रहेगी?

यह घटना केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं, बल्कि पूरे प्रशासनिक तंत्र की विफलता का प्रतीक बन गई।

अभी दो दिवस पूर्व राइस सिटी में भी रोड़ों पर हुए गड्ढों से परेशान लोगों ने भीख मांगो एक रैली निकाली जिसमें आम जनता से पैसे लेकर नगर परिषद को देने की बात कही गई ताकि वह गड्ढों को बुझा सके

छत्तीसगढ़ की भाटा पारा सिटी में रोड पर पड़े गड्ढे के कारण एक्टिवा से लोग गिर पड़े और करीब एक माह तक अस्पताल में भर्ती रहे बड़ी मुश्किल से बहुत महंगा ट्रीटमेंट करने के बाद उनकी जान बची।

भारत में सड़कों की खराब स्थिति एक संरचनात्मक संकट

भारत का सड़क नेटवर्क विश्व में दूसरा सबसे बड़ा है, जिसकी लंबाई 63 लाख किलोमीटर से अधिक है। इसके बावजूद सड़क सुरक्षा, गुणवत्ता और रखरखाव के मामले में भारत वैश्विक सूचकांकों में बेहद नीचे है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों के मामले में भारत लगातार विश्व में शीर्ष पर बना हुआ है।

इनमें एक बड़ा कारण सड़कों की जर्जर स्थिति, गड्ढे, असमान सतह जलभराव और अवैज्ञानिक डिजाइन है।

ग्रामीण भारत में स्थिति और भी भयावह है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के बावजूद बड़ी संख्या में ग्रामीण सड़कें या तो जर्जर हैं या समय पर मरम्मत के अभाव में जानलेवा बन चुकी हैं।

बरसात के मौसम में गड्ढे दिखाई नहीं देते, जिससे दुर्घटनाओं की आशंका कई गुना बढ़ जाती है।

पुरानी शहरी सड़कों पर नई पाइपलाइन, केबल और सीवेज के लिए की गई खुदाई महीनों तक खुली रहती है, और मरम्मत केवल कागज़ों में सटीक रूप से पूरी होती है।

निर्माण मलबा और अंडर-कंस्ट्रक्शन अव्यवस्था भारत के शहरों में अंडर - कंस्ट्रक्शन मकानों और इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं का मलबा सड़कों पर पड़ा रहना आम बात हो गई है। नियमों के अनुसार निर्माण स्थल को सुरक्षित करना, चेतावनी संकेत लगाना और मलबा हटाना अनिवार्य है।

लेकिन ज़मीनी स्तर पर इन नियमों का खुलेआम उल्लंघन होता है।

* स्थानीय नगर निकाय, पुलिस और विकास प्राधिकरण एक - दूसरे पर जिम्मेदारी डालकर चुप्पी साध लेते हैं।

* आंखें और मुंह बंद व्यवस्था सड़क दुर्घटनाओं के बाद अक्सर देखा जाता है कि प्रशासनिक मशीनरी सक्रिय होने में घंटों लगा देती है।

* एम्बुलेंस की देरी, ट्रैफिक पुलिस की अनुपस्थिति और अस्पतालों में इलाज में लापरवाही कई बार मौत को निश्चित बना देती है।

* यह केवल व्यक्तिगत असंवेदनशीलता नहीं, बल्कि एक संस्थागत संस्कृति का परिणाम है, जहां जवाबदेही का अभाव है।

*** निर्माण कार्यों की अनुमति देने वाले विभागों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है,** लेकिन यही विभाग अक्सर सुरक्षा मानकों की अनदेखी करते

हैं।

*** सड़क खुदाई की अनुमति देने के बाद**

* उसकी निगरानी नहीं होती कि गड्ढा समय पर भरा गया या नहीं,

* चेतावनी बोर्ड लगाए गए या नहीं।

यह लापरवाही दुर्घटनाओं की श्रृंखला को जन्म देती है, जिसे लेखकीय रूप से प्रशासनिक लापरवाही का साइकिल कहा जा सकता है।

विकसित भारत 2047 बनाम सड़क सुरक्षा की हकीकत विकसित भारत 2047 की परिकल्पना में विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर एक केंद्रीय स्तंभ है। सरकार ने भारतमाला, गतिक शक्ति, स्मार्ट सिटी मिशन और अमृत योजना जैसी कई महत्वाकांक्षी परियोजनाएं शुरू की हैं। **लेकिन प्रश्न यह है कि क्या केवल नई सड़कों और एक्सप्रेसवे का निर्माण ही विकास है, या मौजूदा सड़कों की सुरक्षा और रखरखाव भी उतना ही आवश्यक है ?**

सरकार ने हाल के वर्षों में पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ सड़क निर्माण के लिए बायो - बिटुमेन जैसी तकनीकों को बढ़ावा दिया है, जिसमें कृषि अपशिष्ट और जैविक सामग्री का उपयोग होता है।

यह तकनीक सड़कों की उम्र बढ़ाने, कार्बन उत्सर्जन कम करने और लागत घटाने में सहायक मानी जा रही है, लेकिन तकनीक तभी प्रभावी होगी जब उसके साथ गुणवत्ता नियंत्रण, पारदर्शिता और जवाबदेही भी सुनिश्चित की जाए।

न्यायपालिकाओं की सख्त टिप्पणीयाँ

* बॉम्बे हाईकोर्ट का हस्तक्षेप रेखांकित करने वाली बात है, बॉम्बे हाईकोर्ट सहित कई न्यायालयों ने बार-बार नगर निकायों और राज्य सरकारों की लापरवाही पर नाराजगी जताई है।

* अदालतों का स्पष्ट मत है कि गड्ढों और खुले मैनहोल से होने वाली मौतें दुर्घटना नहीं, बल्कि मानव निर्मित आपराधिक लापरवाही हैं।

* अदालत ने कहा कि जब तक अधिकारियों और ठेकेदारों को व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा, तब तक स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा।

* केवल मुआवजा देना पर्याप्त नहीं है; दोषियों के खिलाफ आपराधिक कार्रवाई आवश्यक है।

* पीआईएल नंबर 71/2013, एक ऐतिहासिक मामला हैं।

* 13 अक्टूबर 2025 को बॉम्बे हाईकोर्ट की दो सदस्य बेंच न्यायमूर्ति की खंडपीठ ने पीआईएल नंबर 71/2013 पर आदेश सुनाया था।

* यह जनहित याचिका 2013 में तत्कालीन न्यायमूर्ति के एक पत्र के आधारपर स्वतः संज्ञान (सुओ मोटो) लेकर दर्ज की गई थी।

* यह मामला इस बात का उदाहरण है कि समस्या कितनी पुरानी और गंभीर है।

* अदालत ने अपने आदेश में कहा कि वर्षों की सुनवाई और निर्देशों के बावजूद जमीनी स्तर पर कोई ठोस सुधार नहीं हुआ है, जो प्रशासन की उदासीनता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

भारतीय सड़को पर परगड्डों की स्थिति को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, में भारत की तुलना और सीख को समझने की करें तो विकसित देशों में सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु दर भारत की तुलना में कहीं कम है।

* इसका कारण बेहतर डिजाइन, नियमित रखरखाव, सख्त जवाबदेही और त्वरित आपातकालीन सेवाएं हैं।

भारत यदि वैश्विक शक्ति बनना चाहता है, तो उसे केवलआर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि नागरिक सुरक्षा के मानकों में भी वैश्विक स्तर अपनाने होंगे।

विश्लेषण भारत की सड़कें केवल यातायात का माध्यम नहीं, बल्कि राज्य की शासन क्षमता और संवेदनशीलता का आईना हैं। युवराज मेहता जैसी मौतें हमें यह याद दिलाती हैं कि विकास के दावों के बीच नागरिकों की जान सबसे बड़ा सवाल है।

विकसित भारत 2047 तभी संभव है,

* जब सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए,

* प्रशासनिक लापरवाही पर कठोर कार्रवाई हो, और

* न्यायपालिका के निर्देशों को केवल कागज़ों में नहीं, बल्कि ज़मीनी स्तर पर लागू किया जाए।

सड़क पर हर गड्ढा, हर खुला मैनहोल और हर अधूरा निर्माण कार्य एक संभावित मौत है।

सवाल यह नहीं कि अगली दुर्घटना कब होगी, सवाल यह है कि क्या हम उससे पहले जागेंगे ?

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

दिल्ली परिवहन विभाग वो कार्य कर और करवा सकता हैं जो कोई नहीं कर या करवा सकता

संजय कुमार बाठला

दिल्ली की सड़को पर
जाम,
दुर्घटनाएं
हादसे
असुरक्षा
वाहन प्रदूषण

किसी एक व्यक्ति की देन नहीं पर इसके लिए सबसे मुख्य दोषी अगर कोई है तो वह है परिवहन विभाग दिल्ली।

जी हां,

परिवहन विभाग जिसकी ना तो कोई नीति है और ना ही निर्धारित दिशा। जिसके कारण दिल्ली की सड़को पर

* ना तो जनता को समयानुसार सार्वजनिक सवारी सेवा उपलब्ध है,

* ना खाली सड़के,
उपलब्ध है तो मजबूरी

* असुरक्षित वाहनों में सफर करने की,

* ना चाहते हुए भी निजी वाहनों को खरीदने की,

दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा दिल्ली में ई रिक्शा 3 पहिया चार सवारी पंजीकृत किया जा रहा है पर

3 पहिया 6 सवारी इलेक्ट्रिक वाहन को पंजीकृत करने में बाधा है,

3 पहिया 3 सवारी टीएसआर जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने पैट्रोल वाहन के समय पाबंदी लगाई थी और सीएनजी टीएसआर आने पर उस पाबंदी पर छूट देते हुए 1 लाख टीएसआर पंजीकृत करने की इजाजत दी थी, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्ट्रिक वाहनों पर कोई टिप्पणी नहीं की पर दिल्ली परिवहन विभाग एक आटो निर्माता कम्पनी के सुप्रीम कोर्ट में टीएसआर से कैप हटाने के केस के आदेश के आधे हिस्से को लोगों को बता कर दिल्ली में नए इलेक्ट्रिक टीएसआर के पंजीकरण को रोकने के साथ इलेक्ट्रिक 3 पहिया 6 सवारी के पंजीकरण को भी रोक कर दिल्ली से प्रदूषण दुर करने का सफल प्रयास कर रहा है।

अब सवाल यह उठता है कि सुप्रीम कोर्ट ने अगर तीन पहिया वाहनों पर कैब लगा रखी हैं तो परिवहन विभाग

1. तीन पहिया ई रिक्शे
2. तीन पहिया ई कैब
3. तीन पहिया वाहनों को ग्रामीण सेवा
4. तीन पहिया वाहनों को इको फ्रेंडली सेवा

पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश को दरकिनार कर कैसे पंजीकृत कर रहा है ?

और अगर कैब सिर्फ टीएसआर 3 पहिया तीन सवारी पर है और वह भी सीएनजी वाहनों पर तो

दिल्ली में अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के लिए उपलब्ध 3 पहिया 6 सवारी इलेक्ट्रिक वाहनों को पंजीकृत करने से क्यों रोक रहा है?

जब की दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्य बेखौफ रूप से करने में लिप्त है:-

1. दिल्ली परिवहन विभाग के अधिकारियों का कैसा खेल 6 सवारी इलेक्ट्रिक वाहन के पंजीकरण पर रोक पर 9 सवारी सीएनजी को खुली छूट

2. दिल्ली में बंद स्लीपर कोच बसों का पंजीकरण बिना किसी सूचना / अधिसूचना को जारी किए बेखौफ पंजीकृत मात्र अपने विशेष के लिए

3. भारत में वाहन बेचने के लिए अनिवार्य जांच एजेंसियों द्वारा प्राप्त सर्टिफिकेट और स्टेट अप्रूवल की अवहेलना कर निर्मित वाहनो का बेखौफ पंजीकरण

4. टीएसआर के स्क्रैप हुए बिना एसओपी की और सुप्रीम कोर्ट के दिशा निर्देशों की अवहेलना कर नए टीएसआर को खरीदने की एलओआई बेखौफ जारी

5. उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल द्वारा जारी राजपत्रित अधिसूचना के बाद भी बन्द सड़को पर ई रिक्शा को बेखौफ दौड़ने की अनुमति

6. बिना पंजीकृत, बिना चालक लाइसेंस, बिना फिटनेस, बिना इंश्योरेंस ई रिक्शों को उच्च न्यायालय के आदेश और जनता की सुरक्षा को दरकिनार कर सड़को पर चलने की छूट

7. बाहरी राज्यों और दिल्ली में निजी वाहन में पंजीकृत वाहनों को बेखौफ व्यवसायिक गतिविधियों को बेखौफ करने की छूट

8. टूटे फूटे, बुरी हालत के वाहनों को बेखौफ सड़को पर चलने की छूट

9. कॉन्ट्रैक्ट कैरेज और आल इंडिया परमिट वाहनों को स्टेज कैरेज परमिट की तरह बेखौफ हर स्थान से सवारी बैठाने और उतारने की छूट।

पूरी दिल्ली में बिछेगा लंबे-लंबे एलिवेटेड कॉरिडोर का जाल, ट्रैफिक जाम से मिलेगी मुक्ति...

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। दिल्ली का आने वाला समय लंबे लंबे एलिवेटेड कॉरिडोर का होगा। दिल्ली में हर तरह लंबे लंबे एलिवेटेड कारिडोर नजर आएंगे। इसकी शुरुआत हो चुकी है। दिल्ली के हर इलाके में एलिवेटेड कॉरिडोर बनाए जा रहे हैं या बनाए जाने की योजना बनाई जा रही है। विशेषज्ञों की मानें तो अब दिल्ली में लंबे-लंबे एलिवेटेड कॉरिडोर बनाकर ही यातायात की समस्या से कुछ हद तक निजात मिल सकती है। लोक निर्माण विभाग के पूर्व प्रमुख अभियंता दिनेश कुमार की मानें तो लंबे लंबे कारिडोर अब समय शहर की जरूरत है।

इसी क्रम में दिल्ली सरकार अब उत्तरी दिल्ली में गुजर रहे सप्लीमेंटरी ड्रेन पर 17 किलोमीटर लंबा एलिवेटेड कॉरिडोर बनाने की योजना पर काम करने जा रही है। इसके लिए लोक निर्माण विभाग ने करीब 9 करोड़ रुपये की लागत से परियोजना के लिए व्यवहार अध्ययन की मंजूरी दे दी है। जिसके लिए जल्द ही टेंडर जारी होगा। माना जा रहा है इससे उत्तरी दिल्ली के बाहरी रिंग रोड पर यातायात जाम और यातायात दबाव में कमी आएगी।

नया बना सहारनपुर एक्सप्रेस-वे शुरू

पूर्वी दिल्ली में उद्घाटन से पहले ही नया बना सहारनपुर एक्सप्रेस-वे शुरू कर दिया गया है। इससे उत्तरी पूर्वी दिल्ली इलाके को बड़ी राहत मिल गई है केंद्र सरकार का द्वारा बनाया गया यह एक्सप्रेस-वे अक्षरधाम से शुरू होता है। इसके शुरू होने से उत्तरी पूर्वी दिल्ली के इलाके के लोगों के साथ साथ गाजियाबाद के लोनी की तरफ रहने वाले लोगों का भी जीवन आसान हो गया है।

दक्षिणी दिल्ली में डीएनडी से बदरपुर तक सिग्नल फ्री यातायात की सुविधा देने वाला दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस-वे अगले कुछ माह में शुरू होने वाला है। इससे बदरपुर की ओर आने जाने वालों को बड़ी राहत मिल सकेगी। वहीं मेहरौली बदरपुर रोड पर बनने वाला पांच किलोमीटर लंबा एलिवेटेड कॉरिडोर भी आने वाले समय में जनता को बड़ी राहत देने वाला होगा।

पश्चिमी दिल्ली में द्वारका एक्सप्रेस-वे से शुरू होने से जनता को बड़ी राहत मिली है। वहीं यूआर-दो ने पश्चिमी दिल्ली को उत्तरी दिल्ली से जोड़ने का काम किया है। इससे लोगों का जीवन आसान हुआ है। अब इसे अलीपुर से आगे बढ़ाकर यमुनापार करते हुए गाजियाबाद के ट्रॉनिका सिटी से आगे तक ले जाने की योजना है। कश्मीरी गेट से हरियाणा सीमा तक भी एक एलिवेटेड कॉरिडोर प्रस्तावित है। यह कश्मीरी गेट से आगे जाने पर मुनक नहर के साथ गुजरेगा। माना जा रहा है कि इसके बनने से इस क्षेत्र में यात्रा समय में 40% तक की कमी आएगी और इसे राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा बनाए जाने की योजना है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार, आज का आह्वान: वरिष्ठ नागरिकों को साइबर स्मार्ट बनाइए।

वरिष्ठ नागरिकों की बचत और गरिमा की रक्षा के लिए चौकसी, सहानुभूति और संगठित राष्ट्रीय पहल का संयोजन आवश्यक है। वरिष्ठ नागरिक तेजी से साइबर अपराधियों के मुख्य निशाने बनते जा रहे हैं।

"डिजिटल अरेस्ट" और पहचान की जालसाजी जैसे घोटाले उनके लिए गंभीर वित्तीय और भावनात्मक नुकसान का कारण बन रहे हैं।

एक राष्ट्रव्यापी, संरचित जागरूकता कार्यक्रम — जिसमें तकनीकी प्रशिक्षण, भावनात्मक सहयोग और बीट - स्तर पर साइबर पुलिस अधिकारी शामिल हों — तुरंत शुरू किया जाना चाहिए।

क्यों वरिष्ठ नागरिक असुरक्षित हैं

* भावनात्मक शोषण: धोखेबाज़ अकेलेपन, डर और अधिकार पर विश्वास का फायदा उठाते हैं।

* वित्तीय जोखिम: बुज़ुर्ग अक्सर जीवनभर की बचत बैंक में रखते हैं, जो उन्हें आकर्षक लक्ष्य बनाता है।

* सीमित डिजिटल साक्षरता: कई लोग साइबर स्वच्छता के बारे में जागरूक नहीं होते, जिससे वे आसानी से धोखे में आ जाते हैं।

हाल के साइबर अपराध मामले (वरिष्ठ नागरिकों को निशाना बनाते हुए) मामला, स्थान , तरीका (Modus Operandi) प्रभाव

* अहमदाबाद "ब्लैक ब्लड" ट्रैप अहमदाबाद, गुजरात धोखेबाज़ों ने "डिजिटल अरेस्ट" का नाटक किया; बुज़ुर्ग को एफडी निकालने पर मजबूर किया। बैंक मैनेजर की सतर्कता से आरोपी की गिरफ्तारी हुई।

* बड़ा धोखा रोका गया; बैंक नोडल अधिकारियों की सक्रिय भूमिका उजागर हुई।

* महाराष्ट्र:- ₹58 करोड़ डिजिटल अरेस्ट घोटाला महाराष्ट्र ठगों ने सीबीआई/ईडी अधिकारियों का रूप धारण कर नकली वीडियो कॉल, फर्जी आईडी और कोर्ट का नाटक किया। पीड़ित ने 40 दिनों में 27 लेन - देन किए। बुज़ुर्ग ने ₹58 करोड़ गंवाए - भारत के सबसे बड़े व्यक्तिगत धोखों में से एक।

* 82 वर्षीय पूर्व सैनिक ठगा गया भारत धोखेबाज़ों ने सुप्रीम कोर्ट के नकली पत्र बनाए, अधिकारियों का रूप धारण किया और दबाव डाला। लगभग US$400,000 (₹3.3 करोड़) का नुकसान।

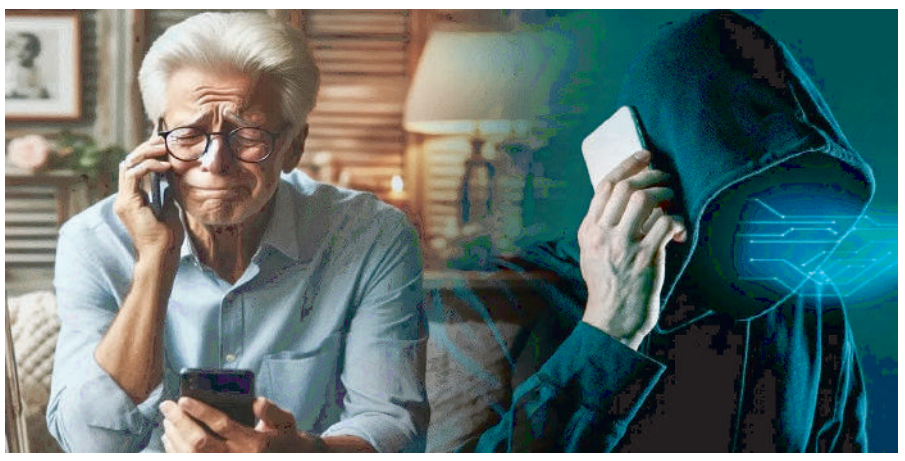

* सेवानिवृत्त कर्नल रोमांस घोटाला भारत ऑनलाइन रिश्तों के ज़रिए भावनात्मक शोषण और ब्लैकमेल। जीवनभर की बचत गंवाई; बुज़ुर्गों में रोमांस स्कैम की बढ़ती प्रवृत्ति उजागर।

* मुंबई आउटरीच सफलता मुंबई, महाराष्ट्र साइबर सेल अधिकारी बुज़ुर्गों के घर जाकर साइबर स्वच्छता सिखाते और भावनात्मक सहयोग देते हैं। असुरक्षा कम हुई; राष्ट्रव्यापी मॉडल के रूप में अनुकरणीय।

* दिल्ली "सेफ आरबीआई अकाउंट" धोखा, दिल्ली पीड़ितों को "सुरक्षित आरबीआई खाते" में पैसे ट्रांसफर करने को कहा गया। कई बुज़ुर्गों ने लाखों गंवाए; पुलिस ने स्पष्ट किया कि ऐसे खाते अस्तित्व में नहीं हैं।

* बेंगलुरु टेक सपोर्ट स्कैम बेंगलुरु नकली "माइक्रोसॉफ्ट सपोर्ट" कॉल से बुज़ुर्गों को रिमोट एक्सेस देने पर मजबूर किया गया। बुज़ुर्ग दंपति ने ₹12 लाख गंवाए; तकनीकी धोखों पर जागरूकता की आवश्यकता उजागर।

* पुणे लॉटरी धोखा पुणे बुज़ुर्गों को लॉटरी जीतने का झांसा देकर "प्रोसेसिंग फीस" मांगी गई। ₹5–10 लाख का नुकसान; लालच और विश्वास का शोषण।

* हैदराबाद निवेश धोखा हैदराबाद धोखेबाज़ों ने वित्तीय सलाहकार बनकर बुज़ुर्गों को नकली योजनाओं में फंसाया। करोड़ों का नुकसान; वित्तीय साक्षरता की कमी उजागर।

मुख्य सबक

* बैंक की सतर्कता जीवन बचाती है: अहमदाबाद केस दिखाता है कि सतर्क बैंक कर्मचारी धोखे को रोक सकते हैं।

* डिजिटल अरेस्ट एक मिथक है: कोई भी एजेंसी डिजिटल माध्यम से गिरफ्तारी नहीं करती।

* भावनात्मक शोषण केंद्रीय है: रोमांस स्कैम, नकली कॉल और फर्जी दस्तावेज बुज़ुर्गों के विश्वास का फायदा उठाते हैं।

राष्ट्रव्यापी अभियान के लिए सिफारिशें

* बीट-स्तर साइबर अधिकारी: प्रत्येक पुलिस बीट में कम से कम एक प्रशिक्षित अधिकारी बुज़ुर्गों की सहायता हेतु नियुक्त हो।

* घर-घर जाकर प्रशिक्षण: मुंबई मॉडल को अपनाकर व्यक्तिगत मुलाकातों से साइबर स्वच्छता सिखाई जाए।

* बैंक साझेदारी: "बैंक नोडल अधिकारी" पहल को सभी प्रमुख बैंकों में विस्तारित किया जाए।

* भावनात्मक सहयोग नेटवर्क: तकनीकी प्रशिक्षण के साथ परामर्श भी दिया जाए ताकि डर और अकेलापन कम हो।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

खराब दिनचर्या का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

आज की आधुनिक जीवनशैली में लोग अपनी दिनचर्या को नज़र अंदाज़ करते जा रहे हैं। देर रात तक जागना, अनियमित भोजन, शारीरिक गतिविधि की कमी और लगातार तनाव—ये सभी खराब दिनचर्या के उदाहरण हैं। ऐसी दिनचर्या का सीधा असर हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, जो कई गंभीर समस्याओं को जन्म दे सकता है।

आज का लेख (पूजा मेंटल हेल्थ और स्कूल काउंसलर)।

खराब दिनचर्या क्या है?

जब व्यक्ति रोज़मर्रा के कार्य जैसे सोना, खाना, काम करना और आराम करना संतुलित तरीके से नहीं करता, तो उसे खराब दिनचर्या कहा जाता है। यह आदतें धीरे-धीरे मानसिक असंतुलन का कारण बनती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य पर खराब दिनचर्या के प्रभाव

1. नींद की समस्या

अनियमित और कम नींद से:
चिड़चिड़ापन बढ़ता है
एकाग्रता में कमी आती है
चिंता और अवसाद का खतरा बढ़ता है
नींद की कमी मानसिक थकान को जन्म देती है।

2. तनाव और चिंता में वृद्धि

खराब दिनचर्या से शरीर और दिमाग को पर्याप्त आराम नहीं मिलता, जिससे:
लगातार तनाव बना रहता है
बेचैनी और घबराहट बढ़ती है
नकारात्मक सोच विकसित होती है

3. अवसाद (डिप्रेशन)

लंबे समय तक असंतुलित दिनचर्या:
उदासी और निराशा बढ़ाती है
आत्म-विश्वास कम करती है
जीवन में रुचि घटाती है
यह स्थिति अवसाद में बदल सकती है।

4. चिड़चिड़ापन और गुस्सा

खराब दिनचर्या के कारण व्यक्ति:
छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा करने लगता है
रिश्तों में तनाव बढ़ता है
भावनाओं पर नियंत्रण खो देता है

5. आत्म-सम्मान में कमी

अस्वस्थ दिनचर्या व्यक्ति को खुद से असंतुष्ट कर देती है, जिससे:
आत्म-संदेह बढ़ता है
खुद को दूसरों से कम आंकने लगता है
सामाजिक दूरी बढ़ती है

6. खराब दिनचर्या सुधारने के उपाय

समय पर सोने और जागने की आदत डालें
संतुलित और पौष्टिक भोजन करें
रोज़ाना व्यायाम या योग करें
मोबाइल और स्क्रीन-टाइम सीमित करें
ध्यान (Meditation) अपनाएँ
परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताएँ
।

यदि आप निरंतर मानसिक भारीपन महसूस कर रहे हैं, तो counselling wali जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसी पेशेवर परामर्शदाता से संपर्क करना एक अच्छा कदम हो सकता है ।

या हमें #9716839398 कॉल करे।

Neck pain (गर्दन दर्द) के आसान उपाय

पिंकी कुंडू

तुरंत राहत के घरेलू उपाय

1. गर्म सेक – तौलिया गरम पानी में भिगोकर 10–15 मिनट गर्दन पर रखें।
2. हल्की मालिश – सरसों या नारियल के तेल में थोड़ा सा कपूर मिलाकर हल्के हाथ से।
3. सही तकिया – बहुत ऊँचा या बहुत पतला तकिया न लें।
4. मोबाइल/लैपटॉप पोज़िशन – स्क्रीन आँखों की सीध में रखें, गर्दन झुकाकर न देखें।

आसान एक्सरसाइज (दर्द न बढ़े तो)

1. गर्दन को धीरे-धीरे दाएँ-बाएँ घुमाएँ (5–5 बार)
2. ऊपर-नीचे हल्का स्ट्रेच
3. कंधों को श्रग करें (ऊपर उठाएँ–नीचे छोड़ें)

आयुर्वेदिक मदद

1. अश्वगंधा चूर्ण: ½ चम्मच गुनगुने दूध के साथ (रात में)
2. हल्दी वाला दूध: सूजन कम करने में मददगार

कब डॉक्टर को दिखाएँ

1. दर्द 5–7 दिन से ज़्यादा रहे
2. हाथ में झनझनाहट/सुन्नपन हो
3. बहुत तेज दर्द या चक्कर आए

आप क्या खा रहे है आपको पता तक है? शुद्ध शाकाहारियों के लिए विशेष

आप जो फूड पैकेट खरीद रहे है उसके पीछे E के साथ कोड लिखे होते है उसको पढ़े और समझे की कही आप धोखे में मांसाहारी तो नहीं खा रहे

पिंकी कुंडू

आप शाकाहारी हैं और मांसाहार को हाथ तक नहीं लगाने वाले भी हैं, तो यह जान ले कहीं अंजाने में प्राणी के अंश का तो उपभोग तो नहीं कर रहे। फूड कम्पनियां या सरकार आपको नहीं बताएंगी। सभी पैक्ड फूड्स पर ई कोड्स अनिवार्य है जिनमें नॉन-वेज कंटेंट होता है जिसे देखकर समझ सकते हैं, जानेः

1. E120 कार्माइन कीड़ों से प्राप्त एक लाल रंग है।
2. E441 जानवरों की हड्डियों और खाल से बनने वाला जिलेटिन (खासकर गौ मारकर) है।
3. E542 जानवरों की हड्डियों से बनने वाला खाद्य-ग्रेड बोन फॉस्फेट है।
4. E901 मधुमक्खियों द्वारा बनाया गया मोम है।
5. E904 लैक कीटों के स्राव से बनने वाला शेलैक है।
6. E913 भेड़ की ऊन के तेल से प्राप्त लैनोलिन है।
7. E966 दूध के शर्करा से बनने वाला लैक्टिटोल है।
8. E1105 अंडे की सफेदी या कुछ जीवों से प्राप्त लाइसोजाइम एंजाइम है।

संदिग्ध कोड्स (पौधे या जानवर दोनों से बन सकते हैं):

9. E471 वसा अम्लों से बने एमल्सिफायर हैं जो पौधों या जानवरों से आ सकते हैं।
10. E472e एसिटाइलेटेड मोनो- और डाइग्लिसराइड्स हैं जिनके स्रोत पौधे या जानवर हो सकते हैं।
11. E473 चीनी और वसा अम्लों से बने एस्टर हैं जिनके स्रोत पौधे या जानवर हो सकते हैं।
12. E474 चीनी, ग्लिसरॉल और वसा अम्लों के मिश्रण से बने सुक्रोग्लिसराइड्स हैं।
13. E475 पॉलीग्लिसरॉल और वसा अम्लों से संश्लेषित एस्टर हैं।
14. E476 अरंडी के तेल और वसा अम्लों से बने पॉलीग्लिसरॉल पॉलीरिसिनोलेएट हैं।
15. E481 स्टीयरिक एसिड से बना एक एमल्सिफायर है जो पौधों या जानवरों से आ सकता है।
16. E482 कैल्शियम स्टीयरॉयल लैक्टिलेट है जिसका स्रोत पौधे या जानवर हो सकता है।
17. E483 स्टीयरिक एसिड से बना स्टीरिल टार्टरेट है।
18. E491 सोर्बिटोल और स्टीयरिक एसिड से बना एक एमल्सिफायर है।
19. E492 सोर्बिटोल और स्टीयरिक एसिड से बना ट्राइस्टीयरेट है।
20. E493 सोर्बिटोल और लॉरिक एसिड से बना मोनोलौरेट है।
21. E494 सोर्बिटोल और ओलिक एसिड से बना मोनोओलेट है।
22. . E495 सोर्बिटोल और पैल्मिटिक एसिड से बना मोनोपैल्मिटेट है।
23. E570 प्राकृतिक वसा से प्राप्त स्टीयरिक एसिड है।
24. E631 मांस या मछली से प्राप्त सोडियम इनोसिनेट है।
25. E635 सोडियम गुआनिलेट और इनोसिनेट का मिश्रण है।
26. E920 मानव बाल, पंख या सूअर की खाल से प्राप्त एल-सिस्टीन है।

तो अगली बार कोई भी फूड पैकेट ले तो कोड़ जानकर और जांच कर ले।

टूटे रिश्तों की यादें? दिमाग़ शांत नहीं रहता? सोना मुश्किल? शरीर पलंग पर - मन पुरानी यादों में अटका।

पिंकी कुंडू

Scientific Reason:

* अश्वगंधा में withanolides होते हैं — ये stress hormones (cortisol) को balance करने में help करते हैं
* Milk में मौजूद tryptophan sleep hormones को support करता है।
* दोनों मिलकर emotional tension soften करते हैं — mind slow होता है, नींद steady आती है।

Ayurvedic Reason:

* अश्वगंधा मनःशामक rasayana — anxiety, emotional pain, fear, overthinking में support।
* गुनगुना दूध वात और पित्त शांत करता है — वही दो दोष emotional breakdown की जड़।

Fayde (Benefits):

* emotional tension कम — पुरानी यादों का बोझ हल्का।
* दिमाग़ शांत — रात में नींद गहरी।
* nervous system relax — stress कम।
* सुबह हल्का feel, मन स्थिर।

Nuksan (Harms):

* thyroid, BP, sugar patient doctor से पूछें।
* नींद की दवा का replacement न समझें — support मानें।
* दिमाग़ बहुत sluggish लगे तो मात्रा घटाएँ।

सुबह उठते ही थकान? energy zero? आँखें खुलें लेकिन शरीर नहीं।

पिंकी कुंडू

Scientific Reason:

* घी में essential fatty acids — brain + muscle energy boost।
* मिश्री natural glucose — morning fuel instantly ready।
* दोनों मिलकर blood sugar की गिरावट को रोकते हैं जो सुबह lethargy का common कारण है।

Ayurvedic Reason:

* घी वात शमन — stiffness, weakness, fatigue कम।
* मिश्री पित्त-संतुलक — mental gloominess हल्का।

Fayde (Benefits):

* सुबह weakness और dullness कम।
* body active — energy पूरे दिन steady।
* दिमाग़ हल्का — morning fog हटती है।
* digestion भी smooth — पेट भी शांत।

Nuksan (Harms):

* high sugar वाले मिश्री limit करें।
* घी ज़्यादा भारी — obesity में control।

पेट में कीड़े की समस्या बार-बार हो जाती है?

पिंकी कुंडू

पेट ठीक से साफ़ नहीं होता, भूख भी अजीब सी रहती है और शरीर धीरे-धीरे कमजोर होने लगता है। इसका कारण पेट में कीड़े होना भी हो सकता है, आइए जाने इसका घरेलू एवं सरल इलाज

Scientific Reason: पेट में कीड़े (intestinal worms) अक्सर गंदे पानी, कच्चे भोजन या कमजोर digestion की वजह से पनपते हैं। कच्चे पपीते में मौजूद papain enzyme कीड़ों के लिए अनुकूल माहौल को खत्म करता है और उनकी पकड़ को आंतों से ढीला करता है। जब digestion सुधरता है, तो कीड़े अपने-आप टिक नहीं पाते।

Ayurvedic Reason: आयुर्वेद में कच्चा पपीता कृमिनाशक माना गया है। यह पाचन अग्नि को तेज़ करता है और आम (toxins) को बाहर निकालने में मदद करता है। जब अग्नि सही हो जाती है, तो कीड़े अपने-आप खत्म होने लगते हैं।

Fayde (Benefits):

* पेट हल्का और साफ़ महसूस होता है
* बार-बार पेट दर्द में राहत
* भूख सामान्य होने लगती है
* शरीर की कमजोरी धीरे-धीरे कम
* digestion पहले से बेहतर

Nuksan (Harms):

* ज़्यादा मात्रा से loose motion
* गर्भवती महिलाएँ न लें
* बच्चों को बहुत कम मात्रा
* 7–10 दिन से ज़्यादा लगातार न लें

अंजन (काजल), जब आँखों का श्रृंगार नहीं, संरक्षण प्रधान हो।

पिंकी कुंडू

आयुर्वेद में अंजन केवल सौंदर्य का साधन नहीं है, यह नेत्रों की रक्षा, शोधन और स्निग्धता बनाए रखने की एक परंपरागत विधि है।

शुद्ध घी और बादाम जैसे पोषक द्रव्यों से बना अंजन नेत्रों की थकान, जलन और दूषित कफ के प्रभाव को शांत करने में सहायक माना गया है।

यही कारण है कि शास्त्रों में इसे नित्य नेत्र-संस्कार के रूप में स्थान मिला है।

आज के समय में, जब आँखें निरंतर स्क्रीन, कृत्रिम प्रकाश और प्रदूषण के संपर्क में रहती हैं, अंजन केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि नेत्र-संतुलन का अभ्यास बन जाता है।

परंतु ध्यान रहे अंजन वही उपयोगी है जो शुद्ध हो, सीमित मात्रा में हो और विवेक के साथ लगाया जाए।

आयुर्वेद हमें सिखाता है जो आँखों को चुभे नहीं, वही वास्तविक सौंदर्य है।

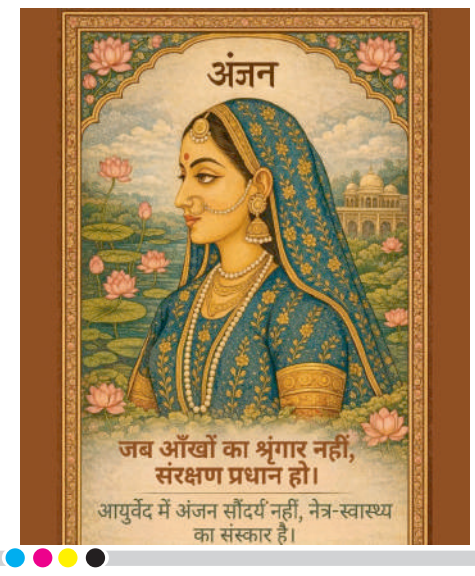

अगर शरीर में एनर्जी (ताकत) कम महसूस हो रही हो, तो करे ये उपाय

पिंकी कुंडू

सरल घरेलू उपाय

1. गुनगुना पानी + शहद + नींबू सुबह खाली पेट लेने से तुरंत एनर्जी मिलती है।
2. भीगे बादाम (5–7) + 1 अखरोट दिमाग और शरीर दोनों को ताकत मिलती है।
3. केला या सेब तुरंत एनर्जी देने वाले फल हैं।
4. गुड़ + चना आयरन बढ़ाता है, कमजोरी दूर करता है।

अपने दैनिक खान-पान में शामिल करें

1. हरी सब्ज़ियाँ (पालक, मेथी)
2. दालें, चना, राजमा
3. दूध, दही
4. अंकुरित मूंग/चना

अपनी दिनचर्या को सुधारें

1. रोज़ 7–8 घंटे नींद लें
2. हल्का योग/प्राणायाम (अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका)
3. ज्यादा चाय-कॉफी से बचें

* ध्यान देने वाली बातें अगर कमजोरी लंबे समय से है, चक्कर आते हैं, सांस फूलती है या वजन बहुत गिर रहा है, तो ये हो सकता है:

1. खून की कमी (हीमोग्लोबिन कम)
2. थायरॉइड
3. शुगर
4. ऐसे में ब्लड टेस्ट और डॉक्टर की सलाह ज़रूरी है।

पिंकी कुंडू

कुरुक्षेत्र का वो 'अंतिम सच' जिसने दुर्योधन को अंदर से तोड़ दिया !

पिंकी कुंडू

कल्पना कीजिए उस मंज़र की:- 18 दिनों के भीषण रक्तपात के बाद कुरुक्षेत्र का मैदान अब युद्धभूमि नहीं, शमशान बन चुका था। जहाँ कल तक शंखनाद और तलवारों की खनखनाहट थी, आज वहां केवल मृत्यु का सन्नाटा गूंज रहा था।

टूटे हुए रथ, हाथियों के शव और रक्त से सनी मिट्टी के बीच, कुरु वंश का अभिमानी युवराज दुर्योधन अपनी टूटी जंघाओं के साथ पड़ा था।

उसकी सांसें उखड़ रही थीं, लेकिन आँखों में पराजय की आग और हृदय में 'छल' का आक्रोश अब भी धधक रहा था।

तभी वहां श्री कृष्ण का आगमन हुआ दुर्योधन ने कृष्ण को देखते ही अपना सारा विष उगल दिया — ₹तुमने छल से मुझे हराया है कृष्ण ! यदि धर्म युद्ध होता, तो पांडव कभी नहीं जीतते !₹

त्रिलोकीनाथ कृष्ण मंद-मंद मुस्कुराए। उनकी मुस्कान में व्यंग्य नहीं, करुणा और सत्य था।

उन्होंने कहा:> ₹दुर्योधन ! तुम पांडवों के 'छल' को देख रहे हो, लेकिन अपने 'चयन' की भूल को नहीं। तुम्हारी हार भीम की गदा से नहीं, तुम्हारे एक गलत निर्णय से हुई है।₹ वो एक निर्णय, जो इतिहास बदल सकता था

कृष्ण ने उस राज से पर्दा उठाया, जिसने मरते हुए दुर्योधन की रूह को कंपा दिया, कृष्ण बोले: ₹तुम्हारी सेना में एक योद्धा ऐसा था, जो साक्षात 'काल' था। जिसे यदि तुम सही समय पर कमान सौंपते, तो यह युद्ध 18 दिन नहीं केवल एक प्रहर में समाप्त हो जाता लेकिन तुमने 'हीरे' को छोड़कर 'कंकड़' पर दांव लगाया।"

वह योद्धा कोई और नहीं — गुरु द्रोण पुत्र अश्वत्थामा था जिसे तुमने कभी 'समझा' ही नहीं।

दुर्योधन तुम अपनी मित्रता और भावनाओं में इतना अंधा हो गए थे कि कर्ण पर तो भरोसा किया, लेकिन अश्वत्थामा (जो शिव के अंशावतार थे) को अनदेखा कर दिया।

कृष्ण ने दुर्योधन को उसकी रणनीतिक भूलों का आईना दिखाया:

* आरंभ (दिन 1-10): तुमने भीष्म को सेनापति बनाया, जो पांडवों से प्रेम करते थे। वे उन्हें मारना ही नहीं चाहते थे।

* मध्य (दिन 11-15): तुमने द्रोणाचार्य को चुना, जो शिष्य-मोह में बंधे थे।

* अंत (दिन 16 - महाभूल): जब द्रोण गिरे, तब तुम्हें अश्वत्थामा को चुनना चाहिए था। उसका क्रोध पिता की मृत्यु के कारण चरम पर था। वह 'रुद्र' बन चुका था किन्तु, तुमने क्या किया?

* तुमने भावुकता में आकर कर्ण को चुना। कर्ण वीर थे, दानवीर थे, लेकिन वे मरणशील थे। जबकि अश्वत्थामा अमर थे।

क्यों अश्वत्थामा थे 'विजय की कुंजी'? कृष्ण ने अश्वत्थामा की शक्तियों का जो वर्णन किया, वह सुनकर दुर्योधन सन्न रह गया:

* रुद्र अवतार: अश्वत्थामा में भगवान शिव का क्रोध और शक्ति समाहित थी।

* अजेय सामर्थ्य: जहाँ कृपाचार्य

60,000 योद्धाओं से लड़ सकते थे, अश्वत्थामा अकेले 72,000 महारथियों को धूल चटाने की क्षमता रखते थे।

* सर्वश्रेष्ठ शिक्षा: उन्हें ज्ञान केवल द्रोण से नहीं, बल्कि परशुराम, व्यास और दुर्वासा जैसे ऋषियों से मिला था।

* नारायणास्त्र का ज्ञान: अर्जुन के पास भी जिसका काट नहीं था, वह अस्त्र अश्वत्थामा के पास था।

कृष्ण ने कहा: "दुर्योधन ! यदि 16वें दिन सेनापति अश्वत्थामा होते, तो पांडव तो क्या, तीनों लोकों की शक्तियां भी उसे रोक नहीं पातीं।"

प्रमाण: 18वें दिन की वो 'काली रात' दुर्योधन को कृष्ण की बातों का प्रमाण उसी रात मिल गया जब वह मृत्युशैया पर अंतिम सांसे ले रहा था, उसने अश्वत्थामा को अपना अंतिम सेनापति घोषित किया और फिर अश्वत्थामा ने तांडव किया। अकेले अश्वत्थामा ने पांडवों के शिविर में घुसकर वह कर दिखाया जो 11 अक्षौहिणी सेना 18 दिनों में न कर सकी:

* धृष्टद्युम्न (द्रोण का हत्यारा) का वध।

* शिखंडी और पांचों उपपांडवों का संहार।

* पांडवों की शेष बची पूरी सेना को एक ही रात में गाजर-मूली की तरह काट दिया।

सुबह जब दुर्योधन को यह समाचार मिला, तो उसकी आँखों से आंसू बह निकले। यह आंसू खुशी के नहीं, गहरे पछतावे के थे।

उसके अंतिम शब्द मौन चीत्कार बन गए।

> "हाय ! जिस शक्ति को मैं अंत में ढूंढ पाया, यदि उसे पहले पहचान लेता... तो आज कुरुक्षेत्र का विजेता मैं होता !₹

दुर्योधन की यह कहानी हमें प्रबंधन और जीवन का सबसे बड़ा पाठ पढ़ाती है:

* "संसाधन होना ही काफी नहीं है, सही समय पर सही व्यक्ति की पहचान करना ही असली नेतृत्व है।"

* अक्सर हम भावनाओं या पूर्वाग्रहों में पड़कर अपने सबसे काबिल 'योद्धाओं' को नजरअंदाज कर देते हैं, और जब तक हमें उनकी कीमत समझ आती है. तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

क्या आप भी अपने जीवन या टीम में किसी

ध्यान, साधना और सिद्धियाँ

पिंकी कुंडू

प्राण ऊर्जा का केंद्र और नाड़ियाँ

मानव शरीर रहस्यों का एक पुंज है। हमारे सूक्ष्म शरीर में कुल ७२,००० नाड़ियाँ विद्यमान हैं, जिनमें तीन मुख्य मार्ग हैं:

इड़ा

पिंगला

सुषुम्ना

साधना का मुख्य उद्देश्य अपनी चेतना को सुषुम्ना मार्ग के माध्यम से मूलाधार चक्र तक ले जाना है। यही वह स्थान है जहाँ माता कुंडलिनी (प्राणशक्ति) वास करती हैं। यहीं से पूरे शरीर में जीवनदायिनी ऊर्जा का निरंतर प्रवाह होता है।

सिद्धियाँ: सुप्त ऊर्जा का जागरण मनुष्य के भीतर अनगिनत सिद्धियाँ सुप्त अवस्था में रहती हैं। इन सिद्धियों को जागृत करने के लिए एक विशेष स्तर की ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

१. अंतर्मुखी चेतना: जब साधक की इंद्रियाँ बाहर की ओर भागना बंद कर अपनी चेतना को अंतर्मुखी (भीतर की ओर) करती हैं, तब यह ऊर्जा सक्रिय होती है।

२. अपार संभावनाएँ: सैद्धांतिक रूप से ७२,००० नाड़ियों में ७,२०,००० सिद्धियाँ समाहित हैं। यह पूरी तरह साधक के अभ्यास और पुरुषार्थ पर निर्भर करता है कि वह कितनी नाड़ियों में ऊर्जा प्रवाहित कर उन्हें जागृत कर पाता है।

ऊर्जा का महत्व और संरक्षण वास्तव में 'सिद्धि' का दूसरा नाम ही 'ऊर्जा' है। हमारा शरीर और मन पूरी तरह ऊर्जा से ही संचालित और प्रभावित होते हैं। इसलिए, साधना मार्ग पर ऊर्जा का

संरक्षण सबसे अनिवार्य है:

१. ऊर्जा का ह्रास: अत्यधिक क्रोध, काम वासना और व्यर्थ के मानसिक विकारों में हमारी बहुमूल्य ऊर्जा नष्ट हो जाती है।

२. साधना का सार: सिद्धियों की प्राप्ति के लिए इस व्यर्थ नष्ट होने वाली ऊर्जा को बचाना और उसे ऊर्ध्वगामी (ऊपर की ओर) बनाना आवश्यक है।

सार : अपनी ऊर्जा को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट न करें, बल्कि उसे साधना के माध्यम से आत्म-शक्ति और सिद्धियों के जागरण में लगाएं।

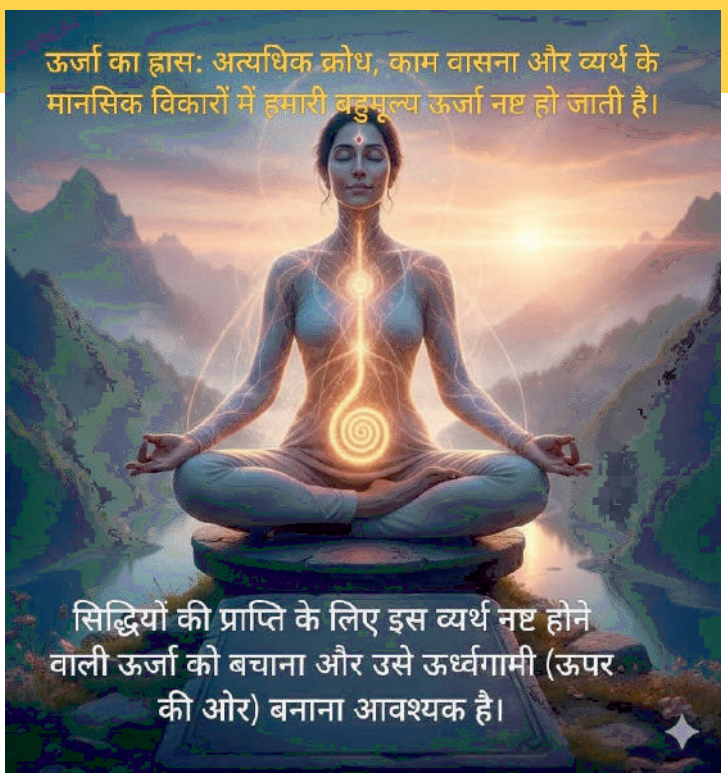

काल भैरव और माँ काली

पिंकी कुंडू

समय और शक्ति के सबसे उग्र एवं परिवर्तनकारी स्वरूप का दिव्य संगम हैं।

* काल भैरव समय, भय और अनुशासन पर पूर्ण नियंत्रण का प्रतीक हैं, जबकि

* माँ काली शुद्ध शक्ति (शक्ति तत्व) की वह प्रचंड ऊर्जा हैं जो अहंकार, माया और नकारात्मकता का संपूर्ण नाश करती हैं।

जब ये दोनों एक साथ प्रकट होते हैं, तो यह नियंत्रित उग्रता का प्रतीक बनता है — जहाँ माँ काली की असीम शक्ति को भैरव बाबा की चेतन सत्ता संतुलन देती है।

यह दिव्य युगल धर्म की रक्षा करता है,

नकारात्मक शक्तियों का संहार करता है

और साधकों के जीवन में तीव्र आध्यात्मिक परिवर्तन लाता है।

इनकी उपासना सिखाती है कि सच्ची मुक्ति तब मिलती है, जब उग्र शक्ति जागरूक चेतना से संतुलित हो।

काल भैरव और माँ काली में समय शक्ति के आगे नतमस्तक होता है, और शक्ति दिव्य नियमों के अनुसार प्रवाहित होती है।

जन्म और मृत्यु बीच एक सांस का फर्क

पिंकी कुंडू

वह जो हमारे भीतर छिपा है, तब तक छिपा रहेगा जब तक आपके अंहकार का भाव मजबूत है। अंहकार के होते आपका स्वयं से कभी भी मिलन नहीं हो सकता जैसे प्रकाश और अंधेरे का कोई मिलन नहीं होता। अंधेरा होता है तो प्रकाश नहीं होता और प्रकाश होता है तो अंधेरा नहीं होता। इसी प्रकार आपके अहंकार के होते आपका स्वयं से और परमात्मा से मिलन नहीं हो सकता। परमात्मा आपके भीतर हृदय में छिपे हैं। जब तक अहंकार है, तब तक जो भीतर छिपा है वह प्रगट न हो सकेगा। ऐसे ही जैसे एक बीज जब टूट जाता है तो अंकुरित होता है और वृक्ष बन जाता है। बीच का खोल ही वृक्ष को छिपाए हुए है।

बच्चा जब जन्मता है तो पहला काम स्वांस को भीतर लेने का करता है। बाहर निकालने को तो उसके पास कोई स्वांस होती ही नहीं। स्वांस का भीतर जाना, जीवन का पहला स्पंदन है। मरता हुआ आदमी जो आखिरी काम करता है, स्वांस को बाहर निकालने का करता है क्योंकि भीतर स्वांस रह जाए तो मृत्यु हो ही नहीं सकती। इसलिए स्वांस का भीतर आना जन्म है और स्वांस का बाहर जाना मृत्यु है। स्वांस के आने-जाने के मध्य एक क्षणिक ठहराव का पल आता है जो समय के पार है। जो ध्यान के अभ्यास से इसे पकड़ लेता है वो स्वयं को जान लेता है। जो स्वयं को जान लेता है वो परमात्मा के सानिध्य में शांति के अनुभव से अपना मनुष्य जीवन सफल बना लेता है।

ऑरा (Aura)" क्या होता है? ये कैसे बनता है, कैसा दिखता है

पिंकी कुंडू

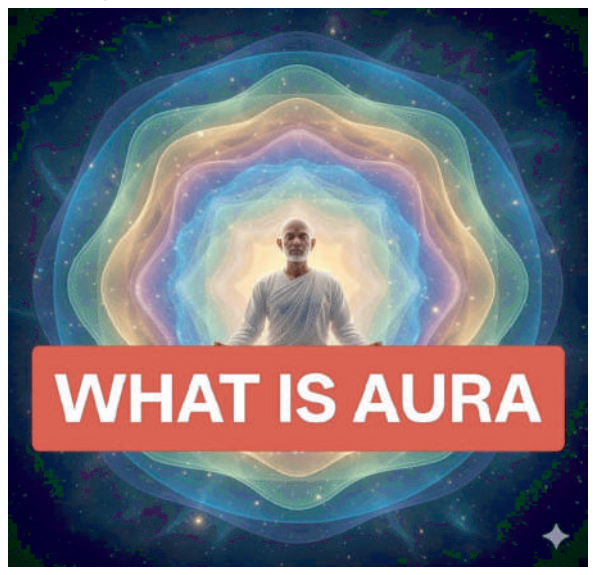

आइए ऑरा के बारे में विस्तार से जानते हैं ऑरा को सरल शब्दों में समझें तो यह आपके शरीर और मन के आसपास का एक ऊर्जा - क्षेत्र (energy field) माना जाता है। जैसे आपके शरीर से गर्मी निकलती है, या आपके पास आने से किसी को "शांति" महसूस होती है, या किसी के पास आते ही "बेचैनी" लगती है— ये सब उसी सूक्ष्म प्रभाव की तरफ इशारा करते हैं जिसे लोग ऑरा कहते हैं।

ऑरा को विज्ञान की भाषा में पूरी तरह "प्रूफ" करना आसान नहीं है, लेकिन अनुभव की दुनिया में बहुत लोग इसे महसूस करते हैं। कुछ लोगों को रंगों के रूप में दिखता है, कुछ को बस "वाइब" के रूप में।

ऑरा कैसे बनता है? ऑरा किसी एक चीज़ से नहीं बनता, ये कई चीज़ों का मिला-जुला प्रभाव है:

1. मन की स्थिति से आपके विचार, भाव और मानसिक तनाव ऑरा को प्रभावित करते हैं।

* शांति ऑरा हल्का, साफ

* क्रोध/डर ऑरा भारी, बिखरा हुआ

2. शरीर की ऊर्जा से आपकी नींद, खाना, व्यायाम, बीमारी — सब असर डालते हैं। कमजोरी में ऊर्जा - क्षेत्र कमजोर लगता है।

3. सांस और प्राण से

* जब सांस अनियमित है, मन बिखरा रहता है।

* जब सांस शांत होती है, ऊर्जा स्थिर होती है।

4. आपकी संगति/वातावरण से कई बार अच्छे लोगों के बीच ऑरा strong लगता है और negative जगहों में heavy लगने लगता है।

ऑरा कैसा दिखता है? हर किसी को ऑरा "दिखता" नहीं है लेकिन जिनको दिखता है, वो अक्सर ऐसे बताते हैं:

*** शरीर के चारों तरफ हल्का सा प्रकाश / धुंध**

* एक तरह की चमक या रंगीन परत, कभी पतली, कभी मोटी layer, कभी साफ, कभी धुंधली

* कई बार ध्यान Alfa या किसी को देखकर अचानक हल्का glow जैसा महसूस होना भी इसी से जोड़ा जाता है।

ऑरा के रंगों का मतलब क्या होता है? (सामान्य मान्यता) ये 100% फिक्स नहीं है, लेकिन सामान्य समझ के लिए बता रहा हूँ

पीला बुद्धि, सीखने की ऊर्जा

हरा healing, करुणा, संतुलन

नीला शांति, भक्ति, सत्य

बैंगनी ध्यान, साधना, आध्यात्मिकता

लाल शक्ति, गुस्सा या बहुत intense ऊर्जा

काला/धुंधला थकान, डर, भारीपन

ऑरा कैसे मजबूत करें? अगर आप चाहते हैं कि आपका ऑरा clean और strong हो, तो ये सबसे असरदार उपाय हैं

1. रोज़ 10 मिनट ध्यान, सिर्फ सांस देखना भी काफी है।

2. भ्रामरी 7 बार, यह मन का तनाव जल्दी उतारती है।

3. साफ भोजन + कम क्रोध, क्योंकि जितना मन भारी होगा उतना ऑरा भी भारी लगेगा।

4. सुबह धूप में 10 मिनट बहुत मदद करती है (energy recharge)

5. कम मोबाइल/कम नकारात्मक बातें क्योंकि दिमाग जितना disturb होगा, उतना field disturb होगा।

ऑरा कैसे "महसूस" करें? (Simple Practice)

1. शांत बैठो

2. 10 गहरी सांस लो

3. दोनों हथेलियों को पास लाओ (2 – 3 inch gap)

4. धीरे-धीरे पास-दूर करो

कई लोगों को बीच में हल्की गर्मी / चुम्बक जैसा महसूस होता है।

सबसे जरूरी बात ऑरा को लेकर डरना नहीं है और चमत्कार के पीछे भागना भी नहीं है। असली बात ये है कि आपकी ऊर्जा आपके विचार और जीवन से बनती है। जितना आपका जीवन साफ होगा, उतना आपकी ऊर्जा साफ लगेगी।

क्या आप जानते हैं की हम पाँच तत्वों से बने हैं और जीवन उन्हीं की परीक्षा है

पिंकी कुंडू

हम अक्सर पूछते हैं — "मैं कौन हूँ?" लेकिन उससे पहले एक और सवाल है - मैं बना किससे हूँ?

हम flesh नहीं हैं। हम degrees नहीं हैं। हम job titles नहीं हैं।

हम बने हैं पाँच तत्वों से और पूरा जीवन इन पाँचों को समझने, सँभालने और संतुलित करने की यात्रा है।

1. पृथ्वी (Earth) — जीवन की नींव जब बच्चा पैदा होता है, तो सबसे पहले ज़मीन पर रखा जाता है। माँ भी ज़मीन पर बैठकर उसे गोद में लेती है।

* क्यों? क्योंकि पृथ्वी grounding देती है।

* ₹सुबह नंगे पाँव घास पर चलना

* किसी पेड़ के नीचे बैठ जाना

* मिट्टी में हाथ डालकर पौधा लगाना

ये सब therapy नहीं हैं — ये तत्वों से संवाद है। आज की generation हवा में जी रही है - dreams, virtual life, social media validation।

लेकिन जब Earth weak होती है तो:

*insecurity आती है

*commitment से डर लगता है

*रिश्ते unstable हो जाते हैं

जिसके भीतर पृथ्वी मजबूत हो, उसे गिरने से डर नहीं लगता।

2. जल (Water) — भावनाएँ, रिश्ते और करुणा जब बच्चा रोता है, तो माँ उसे चुप नहीं कराती — वह उसे महसूस करती है। क्यों? क्योंकि जल = भावना।

*हमारे जीवन में जल है:

*माँ की ममता

*दोस्त के सामने बहते आँसू

*किसी गीत को सुनकर भर आई आँखें

*टूटे दिल के बाद की चुप्पी

आज हम कहते हैं — "Don't be emotional." "Be practical." लेकिन याद रखो कि जो महसूस करना बंद कर देता है, वह धीरे-धीरे जीवित रहना भी भूल जाता है।

जब Water block होता है:

*₹depression आता है

*₹loneliness आती है

*₹रिश्ते सूख जाते हैं

इसीलिए नदियाँ बहती हैं — रुकती नहीं।

3. अग्नि (Fire) — इच्छाएँ, जुनून और पहचान अग्नि तुम्हारे भीतर है:

*कुछ कर दिखाने की भूख

*खुद को साबित करने की चाह

* अपमान के बाद उठ खड़े होने की ताकत

* Fire gives identity. लेकिन आज की generation में अग्नि या तो:

* बहुत ज़्यादा है (anger, burnout, ego)

*₹या बहुत कम (lack of motivation, numbness)

जब अग्नि असंतुलित होती है:

*रिश्ते जल जाते हैं

*शरीर थक जाता है

*मन चिड़चिड़ा हो जाता है

इसीलिए हमारे यहाँ कहा गया — "अग्नि को पूजा जाता है, लेकिन उससे खेला नहीं जाता।" और इसी कारण — मृत्यु के बाद शरीर को अग्नि को सौंपा जाता है। क्योंकि अग्नि कहती है: "जो था, उसे छोड़ो। अब रूप बदलने दो।"

4. वायु (Air) — चिंता, स्वतंत्रता और गति कभी ध्यान दो —

* जब मन घबराया होता है, तो सांस तेज़ हो जाती है।

* जब प्रेम में होते हो, तो सांस अपने आप गहरी हो जाती है।

* Breath mirrors the mind.

आज की generation:

*future की चिंता में जी रही है

* comparison में सांस भूल चुकी है

*जब Air disturbed होती है:

*anxiety attack

*restlessness

*sleep issues

इसीलिए योग में सबसे पहले सिखाया जाता है — प्राणायाम। जो अपनी सांस को संभाल लेता है, वह अपनी ज़िंदगी को भी संभाल सकता है।

4. आकाश (Space) — अकेलापन नहीं, आत्मा सबसे misunderstood तत्व — आकाश।

* आकाश का मतलब emptiness नहीं है।

* आकाश का मतलब है space to be.

* जब तुम अकेले बैठते हो और phone नहीं उठाते — वहाँ आकाश है।

* जब विचार आते - जाते हैं और तुम सिर्फ़ देख रहे हो — वहाँ आकाश है।

आज हम silence से डरते हैं लेकिन याद रखो: भीड़ में खो जाना आसान है, अकेले बैठकर खुद से मिलना कठिन।

जब आकाश कम हो जाता है:

* overstimulation

* constant irritation

*₹identity confusion

तो मृत्यु पर शरीर को जलाया क्यों जाता है?

* क्योंकि शरीर किराये का था।

* -मिट्टी का मिट्टी को

* -जल का जल को

* -वायु का वायु को

* -अग्नि का अग्नि को और

* जो बचता है, वह किसी तत्व में नहीं बँधता। वह चेतना है। वह आकाश है।

* तुम career नहीं हो।

* तुम relationship status नहीं हो।

* तुम followers नहीं हो।

तुम पाँच तत्वों का संतुलन हो। अगर जीवन बिगड़ रहा है, तो बाहर solution मत ढूँढो। पूछो:

1. क्या मैं grounded हूँ? (Earth)

2. क्या मैं महसूस कर रहा हूँ? (Water)

3. क्या मेरी आग सही दिशा में है? (Fire)

4. क्या मेरी सांस शांत है? (Air)

5. क्या मेरे भीतर मौन है? (Space)

जो तत्वों से जुड़ जाता है, वह जीवन से नहीं टूटता।

जिला व उपमंडल स्तर पर आज आयोजित होंगे समाधान शिविर

सुबह 10 से 12 बजे तक आमजन की समस्याओं की होगी सुनवाई

झज्जर, 21 जनवरी।

जिले में आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से (वीरवार 22 जनवरी) को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। ये समाधान शिविर प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक संचालित होंगे।

जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय, झज्जर स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल करेंगे। शिविर के दौरान उपायुक्त नागरिकों की विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें एवं समस्याएं सुनेंगे तथा संबंधित अधिकारियों को मौके पर ही समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगे।

इसी प्रकार उपमंडल स्तर पर समाधान शिविरों का आयोजन संबंधित लघु सचिवालय परिसरों में किया जाएगा। बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, आईएएस, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ. रमन गुप्ता की अध्यक्षता में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में नागरिकों की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित किया जाएगा।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि समाधान शिविर प्रशासन एवं नागरिकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि जिला मुख्यालय में समाधान शिविर प्रत्येक सप्ताह सोमवार एवं गुरुवार को नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी मौके पर उपस्थित रहते हैं, जिससे आमजन को एक ही स्थान पर उनकी समस्याओं का समाधान उपलब्ध कराया जा सके।

77 वें गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियां जोरों पर : डीसी

जिला स्तरीय कार्यक्रम में हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री राजेश नागर फहराएंगे राष्ट्रीय ध्वज जिला के साथ साथ उपमंडल स्तर पर पूरे उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाएगा गणतंत्र दिवस समारोह

झज्जर। राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस समारोह जिला के साथ-साथ बहादुरगढ़, बेरी और बादली में उपमंडल स्तर पर भी पूरे उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। गणतंत्र दिवस समारोह को लेकर आवश्यक तैयारियां जोर शोर से चल रही हैं।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि रोडवेज वर्कशॉप में 26 जनवरी को मनाए जाने वाले जिला स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर हरियाणा के खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री राजेश नागर राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे।

उन्होंने बताया कि बहादुरगढ़ में आयोजित होने वाले उपमंडल स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून, बेरी में दादरी के विधायक सुनील सतपाल सांगवान तथा उपमंडल बादली में जिला परिषद झज्जर के चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना राष्ट्रीय ध्वज फहराकर मार्च पास्ट की सलामी लेंगे।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि इस अवसर पर सभी विभागों के साथ साथ स्कूल व कॉलेजों में निरंतर सांस्कृतिक कार्यक्रमों अभ्यास किया जा रहा है। जिसको 24 जनवरी को फाइनल रिहर्सल में अंतिम रूप दिया जाएगा।

बेरी उपमंडल में एग्री स्टैक फार्मर आईडी अभियान को मिली तेज़ रफ्तार

अब तक 7,792 किसानों ने कराई फार्मर आईडी जनरेट, डिजिटल पहल को मिल रहा व्यापक समर्थन

परिवहन विशेष न्यूज

बेरी (झज्जर), 21 जनवरी। बेरी उपमंडल में एग्री स्टैक फार्मर आईडी बनाने को लेकर किसानों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। इतना ही नहीं डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के मार्गदर्शन में टीमें आईडी कार्य में लगी हुई हैं। एसडीएम बेरी रेणुका नांदल ने बताया कि सरकार की इस महत्वपूर्ण डिजिटल पहल के तहत अब तक उपमंडल में 7 हजार 792 किसानों ने अपनी फार्मर आईडी जनरेट करवा ली है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि किसान आधुनिक तकनीक को अपनाते हुए भविष्य की कृषि योजनाओं के लिए स्वयं को तैयार कर रहे हैं। एसडीएम रेणुका नांदल ने कहा कि आने वाले समय में कृषि एवं किसान कल्याण से जुड़ी विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ फार्मर आईडी के माध्यम से ही प्रदान किया जाएगा। ऐसे में सभी पात्र किसानों के लिए फार्मर आईडी बनवाना बेहद आवश्यक है। फार्मर आईडी से किसानों का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार होगा, जिससे योजनाओं का लाभ पारदर्शी, तेज़ और सुगम तरीके से सीधे किसानों तक पहुंच सकेगा।

उन्होंने बताया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की टीमें गांव-गांव जाकर किसानों को फार्मर आईडी के लाभों के बारे में जागरूक कर रही हैं। साथ ही विभाग द्वारा जगह-जगह कैंप लगाकर किसानों की फार्मर आईडी मौके पर ही बनाई जा रही है, ताकि किसी किसान को परेशानी न हो। उन्होंने बताया कि बीईओ डॉ अशोक रोहिल्ला के नेतृत्व में टीम आईडी कार्य की लगातार मोनिटरिंग कर रही हैं।

एसडीएम ने अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि उनका लक्ष्य है कि बेरी उपमंडल के सभी पात्र किसानों की फार्मर आईडी तय समय में शत-प्रतिशत बनाई जाए। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे आगे आकर अपनी फार्मर आईडी अवश्य बनवाएं और सरकार की डिजिटल कृषि व्यवस्था का लाभ उठाएं।

झज्जर के बिजली उपभोक्ताओं की आज होगी रोहतक में सुनवाई

झज्जर, 21 जनवरी। उपभोक्ताओं की बिजली एवं बिजली बिल से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के निवारण के उद्देश्य से वीरवार, 22 जनवरी को प्रातः 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक चेयरमैन जोनल फॉर्म उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम द्वारा राजीव गांधी विद्युत सदन रोहतक स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सुनवाई की जाएगी। प्रवक्ता ने बताया कि इस दौरान चेयरमैन, चीफ इंजीनियर जोनल फॉर्म रोहतक स्वयं उपभोक्ताओं की समस्याएं सुनेंगे तथा उनका त्वरित निवारण सुनिश्चित करेंगे। विशेष रूप से झज्जर जिले के उपभोक्ता भी अपने बिजली बिल संबंधी मामलों को बैठक में प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि यदि उपभोक्ता अधीक्षण अभियंता, कार्यकारी अभियंता या उपमंडल अभियंता के निर्णय से संतुष्ट ना हो तो वे अपनी शिकायत चेयरमैन, जोनल फॉर्म रोहतक के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने रखी चार चौकों का किया शिलान्यास : डीसी

शहर की सुंदरता के प्रतीक बनेंगे नये चौक , एक करोड़ से अधिक की धनराशि खर्च होगी- बोले डीसी

बहादुरगढ़, 21 जनवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बुधवार को शहर के अलग अलग स्थानों पर प्रस्तावित चार चौकों का नारियल तोडक़र शिलान्यास किया। नगरपरिषद क्षेत्र में सेक्टर-09 बाईपास, रेलवे रोड पर रेलवे जक्शन, झज्जर बादली चौक राव तुला राम पार्क, नाहरा-नाहरी रोड जंक्शन पर प्रस्तावित चार चौकों के निर्माण पर लगभग एक करोड़ से अधिक धनराशि खर्च होगी। बहादुरगढ़ पंहुचने पर एसडीएम अभिनव सिवाच ने डी सी स्वप्निल रविंद्र पाटिल का स्वागत किया।

डीसी ने बताया कि चौकों के निर्माण होने से शहर की सुंदरता के प्रतीक होंगे। प्रत्येक चौक का निर्माण एक थीम के आधार होगा, जो शहर और उक्त क्षेत्र को नई पहचान देगा। चार महिने में इनका निर्माण कार्य पूरा करने को कहा गया है। उपायुक्त ने कहा कि इन चौकों के निर्माण से शहर में यातायात व्यवस्था सुचारू होगी, आमजन को सुरक्षित व सुगम आवागमन की सुविधा मिलेगी। इस उपरांत डीसी ने उपमंडल लघु सचिवालय का निरीक्षण किया और अधिकारियों के साथ शहर में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। डीसी ने अधिकारियों से शहर की स्वच्छता, सडक़ मार्गों के निर्माण, अवैध अतिक्रमण पर रोक सहित अन्य विषयों पर रिपोर्ट भी तलब की। उन्होंने कहा कि अतिक्रमण और अवैध प्लाटिंग की रोकथाम के लिए सख्त कार्रवाई अमल में लाएं।

शिलान्यास कार्यक्रम में नगरपरिषद बहादुरगढ़ की वरिष्ठ भाजपा नेता दिनेश कौशिक, नप चेयरपर्सन सरोज राठी, चेयरमैन विनोद कौशिक, वाइस चेयरमैन राजपाल शर्मा, मनीषा धनखड़, पवन रोहिल्ला, विनोद कुमार, हरिमोहन धाकरे, संजीव मलिक, सचिन दलाल, राजेश तंवर, अशोक शर्मा, राजेश मकड़ौली, अश्वनी शर्मा अनिल सिंघल सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

प्रशासन की ओर से एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस, नप कार्यकारी अरुण नांदल, नप कार्यकारी अभियंता पंकज सैनी सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

स्वीकृत कॉलोनियों में ही प्लाट खरीदें नागरिक : डीसी

अवैध कॉलोनी काटने के मामले में बहू गांव में जिला प्रशासन ने की कार्रवाई

गांव बहू में संबंधित विभाग ने जारी किए खसरा नंबर, जमीन की खरीद व बिक्री पर लगाई रोक

झज्जर, 21 जनवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि झज्जर क्षेत्र के गांव बहू में बगैर लाइसेंस व तय प्रक्रिया पूरी किए अवैध कॉलोनी काटे जाने के मामले में गंभीरता से संज्ञान लेते हुए कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि गांव बहू के किला नंबर 24//11/1, 11/2 में कुछ व्यक्तियों द्वारा बिना लाइसेंस के प्लाट बिक्री की सूचना मिली है। उन्होंने बताया कि उक्त खसरा नंबरों से जुड़े किसी भी प्रकार के सेल-डीड, एग्रीमेंट टू सेल, पावर ऑफ अटॉर्नी या फुल पेमेंट एग्रीमेंट को रजिस्टर्ड करने पर रोक लगाई गई है। डीटीपी विभाग के अनुसार उक्त मामले में न तो विभाग से कोई लाइसेंस, सीएलयू और न ही एनओसी प्राप्त की गई है।

उन्होंने बताया कि बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता को उक्त अवैध कॉलोनी में किसी भी प्रकार का बिजली कनेक्शन जारी न करने के निर्देश दिए गए हैं। वहीं, हरियाणा स्टेट एनफोर्समेंट ब्यूरो के थाना प्रभारी को उक्त साइट पर सख्त निगरानी रखने और किसी भी प्रकार के निर्माण या सड़क नेटवर्क विकसित न होने देने को कहा गया है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि जिले में अवैध कॉलोनियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और आमजन से अपील की है कि वे भू-माफियाओं से बचें । केवल सरकार द्वारा वैध एवं स्वीकृत कॉलोनियों में ही अपना मकान बनाने के लिए प्लाट खरीद सकते हैं। डीसी ने कहा कि जिला प्रशासन अवैध कॉलोनियों को गिराने के लिए निरंतर अभियान चला रहा है।

वसंत पंचमी: जब प्रकृति, प्रेम और कला एक साथ गुनगुनाते हैं

-सुनील कुमार महला

23 जनवरी 2026 को हम सभी वसंत पंचमी का पावन पर्व मनाने जा रहे हैं। इसे माघ मास की शुक्ल पंचमी, सरस्वती पूजन दिवस और विद्या-आराधना के पर्व के रूप में भी जाना जाता है। यह दिन न केवल ऋतु परिवर्तन का संकेत देता है, बल्कि भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना और प्रकृति के नवजीवन का उत्सव भी है। वसंत पंचमी को माँ सरस्वती के प्राकट्य दिवस के रूप में मान्यता प्राप्त है और इसी कारण यह ज्ञान, कला, संगीत, सृजन और बुद्धि की उपासना का विशेष अवसर बन जाती है।

पुराणों के अनुसार, जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की, तब उन्हें चारों ओर मौन और निस्तब्धता अनुभव हुई। उस नीरवता को तोड़ने के लिए उन्होंने अपने कमंडल से जल छिड़का, जिससे एक दिव्य देवी प्रकट हुईं, जिनके हाथों में वीणा थी। जैसे ही उन्होंने वीणा का मधुर नाद छेड़ा, संसार को वाणी, शब्द और अभिव्यक्ति का वरदान मिला। वह दिन माघ शुक्ल पंचमी का ही था, इसीलिए इसे देवी सरस्वती का जन्मदिन माना जाता है। यह कथा केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि इस सत्य का प्रतीक है कि ज्ञान और वाणी के बिना सृष्टि भी अधूरी है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वसंत पंचमी अलग-अलग नामों और परंपराओं के साथ मनाई जाती है। दक्षिण भारत में इसे 'श्री पंचमी' कहा जाता है, जहाँ 'श्री' शब्द देवी लक्ष्मी का प्रतीक है, जो समृद्धि और ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री हैं। इस प्रकार वसंत पंचमी ज्ञान और समृद्धि—दोनों शक्तियों के संगम का पर्व बन जाती है। मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण की 'सिग्नेचर ट्यून' भी वसंत ही है। स्वयं श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है-'ऋतुनां कुसुमाकरः', अर्थात ऋतुओं में मैं वसंत हूँ। इसका अर्थ है कि वसंत वह काल है जब संपूर्ण सृष्टि स्वयं एक जीवंत संगीत बन जाती है।

वसंत पंचमी को 'मदनोत्सव' भी कहा जाता है। 'मदन' कामदेव का ही एक नाम है, इसलिए यह पर्व प्रेम, आकर्षण और सौंदर्य का उत्सव भी माना जाता है। इस समय प्रकृति में यौवन का संचार स्पष्ट दिखाई देता है। वृक्ष अपने पुराने पत्ते त्याग कर नई कोंपलों का स्वागत करते हैं। खेतों में लहलहाती सरसों किसानों की मुस्कान बन जाती है और पलाश (टेसू) के लाल फूल जंगलों में प्रेम की अग्नि-से दहकते प्रतीत होते हैं। कोयल की कूक, मधुमक्खियों की गूंज, भौंरों का गुंजार और तितलियों की उड़ान-सब मिलकर वातावरण में एक अनोखा नशा घोल देते हैं।

यह दिन बुद्धि और कला के अद्भुत संगम का प्रतीक है। माँ सरस्वती का जन्म केवल एक धार्मिक मान्यता नहीं, बल्कि ज्ञान की शक्ति का उत्सव है। लेखकों की कलम, गायकों के सुर, चित्रकारों के रंग और विचारकों के दृष्टिकोण को नई ऊर्जा देने के लिए वसंत पंचमी से श्रेष्ठ कोई मुहूर्त नहीं माना जाता। इसी कारण इस दिन 'अक्षर अभ्यासम' की परंपरा है। विद्या और कला से जुड़े लोग अपनी पुस्तकों, कलम और वाद्य यंत्रों की पूजा करते हैं। बंगाल और दक्षिण भारत के अनेक क्षेत्रों में छोटे बच्चों को पहली बार अक्षर लिखना इसी दिन सिखाया जाता है, जिसे 'विद्यारंभ संस्कार' कहा जाता है।

वसंत पंचमी में पीले रंग का विशेष महत्व है। पीला रंग केवल सूर्य का प्रतीक नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से उत्साह, आशा और ऊर्जा बढ़ाने वाला माना जाता है। इस समय सरसों की पीली फसलें धरती के श्रृंगार का दृश्य रचती हैं। आयुर्वेद के अनुसार, वसंत ऋतु में शरीर में कफ की अधिकता होती है और पीले रंग से जुड़े तत्व—जैसे हल्दी और केसर—शरीर में ऊष्मा और स्फूर्ति बनाए रखने में सहायक होते हैं। इसी कारण पीत वस्त्र, पीले पकवान और पीले पुष्प इस पर्व का अभिन्न अंग हैं।

स्वास्थ्य और योग की दृष्टि से भी वसंत पंचमी एक 'नेचुरल हीलिंग' का समय है। वसंत ऋतु की स्वच्छ और सुगंधित हवा रक्त संचार को संतुलित करने में सहायक होती है। ध्यान, प्राणायाम और योग का आरंभ करने के लिए यह मौसम अत्यंत अनुकूल माना जाता है। इस ऋतु की ताजगी मन को एकाग्र करने में सहज और प्राकृतिक सहायता प्रदान करती है। सच कहा जाए तो वसंत पंचमी हमें यह सिखाती है कि जीवन में ज्ञान (सरस्वती) और प्रेम (कामदेव) का संतुलन ही वास्तविक आनंद का स्रोत है।

'चरक संहिता' के अनुसार, वसंत ऋतु में प्रकृति और मनुष्य-दोनों के भीतर नया उत्साह और यौवन उमड़ पड़ता है। यह पर्व केवल मानव जीवन तक सीमित नहीं, बल्कि ब्रज की गलियों में राधा-कृष्ण के दिव्य रास का भी प्रतीक है। मान्यता है कि वसंत पंचमी के दिन श्रीकृष्ण ने पीत वस्त्र धारण किए थे, तभी से पीला रंग शुभता, उल्लास और ज्ञान का प्रतीक माना जाने लगा। इसी दिन माता पार्वती ने भगवान शिव की तपस्या को भंग करने के लिए कामदेव को भेजा था, जिससे अंततः शिव-पार्वती विवाह और भगवान कार्तिकेय के जन्म की कथा जुड़ी हुई है।

वास्तव में वसंत पंचमी का संबंध हिंदू धर्म की तीनों देवियों-'सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती' से माना जाता है। यह ज्ञान, समृद्धि और सृजनशीलता—इन तीनों शक्तियों की आराधना का पर्व है। यह देवी सरस्वती और सरस्वती नदी से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक और वैदिक मान्यताओं के अनुसार, सरस्वती नदी उत्तर-पश्चिमी भारत में बहने वाली एक प्राचीन नदी थी, जो कालांतर में लुप्त हो गई। वसंत ऋतु में हिमालयी हिमनदों के पिघलने से इस नदी में जल प्रवाह बढ़ जाता था और उसके तटों पर दूर-दूर तक सरसों के पीले फूल खिल उठते थे।

कहा जाता है कि महर्षि वेदव्यास और अनेक ऋषियों के आश्रम सरस्वती नदी के तट पर स्थित थे। यहीं वेदों, उपनिषदों और अन्य महान ग्रंथों की रचना एवं संकलन हुआ। इस कारण सरस्वती नदी ज्ञान और बुद्धि की देवी सरस्वती का पर्याय बन गई। वसंत पंचमी के दिन माँ सरस्वती का श्रृंगार पीताम्बरी वस्त्रों से किया जाता है और कई परंपराओं में इसी दिन से बच्चों की औपचारिक शिक्षा का आरंभ किया जाता है। प्राचीन काल में वसंत पंचमी से ही महीने भर चलने वाले वसंतोत्सव की शुरुआत होती थी, जिसका समापन होली के रंगोत्सव पर होता था।

वसंत पंचमी से जुड़ी पौराणिक कथाओं में कामदेव और शिव की कथा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मान्यता है कि इसी दिन कामदेव कैलाश पर्वत पर गए और भगवान शिव की तपस्या भंग करने के लिए एक मायावी इंद्रधनुष रचा। अंततः शिव की समाधि तो भंग हुई, लेकिन क्रोध में उन्होंने कामदेव को भस्म कर दिया। बाद में पार्वती से विवाह और कार्तिकेय के जन्म के माध्यम से तारकासुर का अंत हुआ।

भारत के विभिन्न प्रांतों में वसंत पंचमी के लोक-रंग भी अत्यंत मनोहारी हैं। पंजाब में यह पर्व पतंग उत्सव के रूप में मनाया जाता है। लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं, पीले चावल बनाते हैं और सिख पुरुष पीली पगड़ियाँ पहनते हैं। महाराष्ट्र में विवाह के बाद पहली वसंत पंचमी पर दंपति पीले वस्त्र पहनकर मंदिर दर्शन करते हैं। राजस्थान में लोग चमेली के फूलों की मालाएँ धारण करते हैं। बिहार में इस दिन सूर्य देव की प्राचीन मूर्ति को स्नान कराकर सजाया जाता है और भव्य उत्सव मनाया जाता है।

यह पर्व मुस्लिम सूफी परंपरा में भी विशेष स्थान रखता है। मध्यकाल में सूफी संत हजरत अमीर खुसरो ने हिंदू संस्कृति से प्रेरित होकर सूफी दरगाहों पर वसंत मनाने की परंपरा शुरू की। आज भी दिल्ली की निजामुद्दीन औलिया दरगाह पर 'सूफी बसंत' मनाया जाता है, जहाँ कव्वाल पीले वस्त्र पहनकर बसंती कलाम गाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र में वसंत पंचमी को 'अबूझ मुहूर्त' माना गया है, अर्थात इस दिन किसी भी शुभ कार्य—विवाह, गृह प्रवेश, नये व्यापार के लिए अलग से मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती। पूरा दिन ही शुभ और दोषमुक्त माना जाता है। वसंत ऋतु भारतीय पंचांग का वह 'गोल्डन पीरियड' है, जिसमें होली की मस्ती से लेकर रामनवमी की भक्ति तक की यात्रा पूरी होती है।

अंततः वसंत पंचमी हमें यह सिखाती है कि भयमुक्त होकर खिलना ही वसंत का सार है। यह वह समय है जब मन के भय, विकार और जड़ता स्वतः दूर होने लगते हैं। गाते हुए पक्षी, खिलखिलाते फूल और मुस्कुराती प्रकृति हमें जीवन में उमंग, प्रेम और सृजन का संदेश देती है। किसानों के लिए यह संकेत है कि रबी की फसल अब पकने को है, इसलिए यह एक कृषि उत्सव का भी प्रारंभिक प्रतीक है। निष्कर्षतः, वसंत पंचमी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि प्रकृति, ज्ञान, प्रेम और सृजन का दिव्य संगम है, जो हमें यह प्रेरणा देता है कि सीखना कभी न रुके और मन सदा वसंत-सा खिलता रहे।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

डीसी ने किया फुटवियर डेवलपमेंट संस्थान का दौरा

संस्थान में युवाओं को निशुल्क प्रशिक्षण देने की बेहतरीन सुविधाएं : डीसी

कौशल विकास के साथ रोजगार की गारंटी का लाभ उठाएं बेरोजगार युवक-युवती

बहादुरगढ़, 21 जनवरी। डी सी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बुधवार को फुटवियर पार्क में स्थापित फुटवियर डेवलपमेंट संस्थान का दौरा किया। इस दौरान एसडीएम अभिनव सिवाच, बीसीसीआई के प्रधान सुभाष जग्गा, पदाधिकारी नरेंद्र छिकारा, विकास सोनी सहित अन्य उद्यमी मौजूद रहे। डीसी ने संस्थान में मौजूद प्रशिक्षण सुविधाओं, लैब सहित अन्य सुविधाओं की जानकारी ली।

बीसीसीआई प्रधान सुभाष जग्गा ने डीसी को जानकारी देते हुए बताया कि बहादुरगढ़ फुटवियर पार्क में देश का लगभग 63 प्रतिशत नॉन लेदर फुटवियर का प्रोडक्शन होता है। केवल बहादुरगढ़ फुटवियर उद्योग ने लगभग साढ़े तीन लाख लोगों को रोजगार दिया हुआ है। प्रोडक्शन की गुणवत्ता बढ़ाने और कौशलयुक्त कर्मियों की कमी को पूरा करने के लिए सरकार के सहयोग से एफडीआई संस्थान खोला गया है। इसमें हर वर्ष 15 हजार युवाओं का कौशल विकास रोजगार की शत-प्रतिशत गारंटी के साथ किया जाता है। प्रशिक्षण अवधि के दौरान युवाओं को यातायात और भोजन की निशुल्क सुविधा है। नरेंद्र छिकारा ने बताया कि लैब में देश भर से फुटवियर क्वालिटी चेक के लिए आते हैं।

बीसीसीआई पदाधिकारियों ने बताया कि संस्थान में लैब टेकनिशियन, सिलाई ऑपरेटर, फुटवियर कटर, फुटवियर डिजाइनिंग, जूता निर्माण, कंप्यूटर प्रशिक्षण, अंग्रेजी बोलचाल प्रशिक्षण, एकाउंटिंग व टैली प्रशिक्षण, वेबसाइट डिजाइनिंग प्रशिक्षण की सुविधा निशुल्क है। प्रशिक्षण की अवधि दो से तीन महिने की है। प्रशिक्षण उपरांत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र, और, ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग के दौरान भत्ता भी दिया जाता है।

उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण 18 से 45 वर्ष की आयु तक, प्रशिक्षण की अवधि दो से तीन माह की है। प्रशिक्षण के इच्छुक युवा को पंजीकरण के लिए अपना आधार कार्ड, शैक्षणिक प्रमाण पत्र, परिवार पहचान पत्र, बैंक पासबुक की प्रति और पासपोर्ट साइज के दो फोटो लाना जरूरी है।

उपायुक्त ने जिलाभर के बेरोजगार युवाओं से आह्वान किया कि वे फुटवियर डेवलपमेंट संस्थान में अपना कौशल निखारकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकते हैं, क्योंकि प्रशिक्षण उपरांत शत-प्रतिशत रोजगार की गारंटी है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा बेरोजगार युवाओं को इस बारे में ग्राम स्तर पर जागरूक किया जाएगा ताकि ज्यादा से ज्यादा सख्यां में बेरोजगार युवा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। इस दौरान जीएम डीआईसी संजीत कौर भी मोजूद रहीं।

गणतंत्र दिवस की तैयारियों के चलते राष्ट्रपति भवन आम जनता के लिए बंद, अमृत उद्यान जल्द खुलेगा

संगिनी घोष

भारत के राष्ट्रपति का आधिकारिक निवास राष्ट्रपति भवन 21 जनवरी से 29 जनवरी तक आम जनता के लिए बंद रहेगा। यह फैसला आगामी गणतंत्र दिवस समारोहों की तैयारियों के मद्देनज़र लिया गया है। हर वर्ष की तरह इस बार भी 26 जनवरी को होने वाली गणतंत्र दिवस परेड और 29 जनवरी को आयोजित बीटिंग रिट्रीट समारोह से पहले सुरक्षा और प्रशासनिक व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से पूरा करने के लिए अस्थायी रूप से राष्ट्रपति भवन को बंद किया गया है। इस अवधि के दौरान मुख्य भवन और संग्रहालय के सभी टूर निलंबित रहेंगे, ताकि अधिकारियों की आवाजाही, रिहर्सल और सुरक्षा जांच में किसी प्रकार की बाधा न आए।

आमतौर पर राष्ट्रपति भवन में पूर्व-बुकिंग के माध्यम से हजारों पर्यटक और स्थानीय निवासी भ्रमण के लिए आते हैं, ऐसे में यह बंदी कई लोगों के लिए निराशाजनक है। अधिकारियों ने बताया है कि जिन लोगों ने इस प्रतिबंधित अवधि के दौरान पहले से बुकिंग कर रखी थी, उन्हें 29 जनवरी के बाद सामान्य गतिविधियां शुरू होने पर पुनर्निर्धारण की जानकारी दी जाएगी। आगंतुकों को सलाह दी गई है कि वे अपनी यात्रा की योजना बनाने से पहले आधिकारिक सूचनाओं पर नजर बनाए रखें, क्योंकि गणतंत्र दिवस के नज़दीक सुरक्षा से जुड़े बदलाव जारी रह सकते हैं।

राष्ट्रपति भवन की बंदी के साथ ही मध्य दिल्ली में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है और यातायात प्रतिबंध भी लागू किए गए हैं। कर्तव्य पथ, विजय चौक और आसपास के कई मार्गों पर परेड रिहर्सल और सुरक्षा तैनाती के कारण आवाजाही नियंत्रित की जा रही है। प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि वे ट्रैफिक एडवाइजरी का पालन करें और राष्ट्रीय समारोहों से पहले के इस दौर में असुविधा से बचने के लिए सुरक्षा कर्मियों का सहयोग करें।

इस बीच, प्रकृति और विरासत प्रेमियों के लिए राहत भरी खबर यह है कि अमृत उद्यान, जिसे पहले मुगल गार्डन के नाम से जाना जाता था, गणतंत्र दिवस के बाद जल्द ही आम जनता के लिए दोबारा खोले जाने की संभावना है। माना जा रहा है कि यह उद्यान फरवरी की शुरुआत में खुल सकता है। रंग-बिरंगे मौसमी फूलों और खूबसूरती से सजे परिदृश्यों के लिए प्रसिद्ध अमृत उद्यान राष्ट्रपति भवन परिसर का एक प्रमुख आकर्षण है। गणतंत्र दिवस से जुड़े कार्यक्रमों के समाप्त होते ही इसके दोबारा खुलने से बड़ी संख्या में पर्यटकों के आने की उम्मीद है, जिससे दिल्ली के इस प्रतिष्ठित स्थल पर फिर से सार्वजनिक गतिविधियां लौटेंगी।

नई संसद 140 करोड लोगों की भावनाओं का प्रतिबिंब है:-राज्यपाल

प्रो. के. पी.सिंह की पुस्तक ₹न्यू पार्लियामेंट-द वॉयस ऑफ़ भारत का लोकार्पण।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अकादमिक जगत में अपनी कर्तव्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन के निदेशक व पुस्तकालय विज्ञान विषय के अद्वितीय प्रो. के.पी. सिंह की बहु प्रतीक्षित पुस्तक,₹ न्यू पार्लियामेंट - द वॉयस ऑफ भारत ₹ का मंगलवार को उत्तराखंड सदन में उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। आरंभ में प्रो. के.पी. सिंह ने महामहिम राज्यपाल को पुष्पगुच्छ,अंग वस्त्रम, स्मृति चिन्ह एवं श्रीमद् भागवत गीता की प्रति भेंट कर स्वागत किया।

प्रो. के.पी.सिंह ने अपने स्वागत वक्तव्य में महामहिम राज्यपाल का स्वागत करते हुए कहा कि उनकी वजह से उनको पुस्तकों के लेखन की प्रेरणा प्राप्त हुई है। उन्होंने बताया कि लॉकडाउन के समय से लेकर आज तक लगातार 4 पुस्तकें क्रमानुसार प्रकाशित हुई हैं। अपनी पुस्तक के प्रेरणा का कारण बताते हुए कहा कि नए संसद भवन का उद्घाटन भारतीय संस्कृति की पुनःप्राप्ति का अवसर था और पूरा देश भावुक था तो उस समय को संजोने के लिए इस पुस्तक को प्रकाशित किया। पुस्तक के विषय में चर्चा करते हुए अटल प्रकाशन की ओर से उपासना काबरा ने कहा कि इस पुस्तक में नए संसद भवन के निर्माण के संकल्प में जिस तरह के वास्तु से लेकर पौराणिक एवं आधुनिक भारत के मिश्रण का जिक्र है। उन्होंने बताया कि 307 पृष्ठ की इस पुस्तक में उस समय देश की भावनात्मक मनोदशा एवं वैचारिकी का विवरण है।

स्वागत वक्तव्य के पश्चात माननीय महामहिम राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह ने प्रो.के. पी. सिंह की पुस्तक का विमोचन किया। अपने उद्बोधन में महामहिम राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह जी ने प्रो. के.पी. सिंह जी को इस अद्वितीय पुस्तक के लिए बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने आह्वान करते हुए कहा कि हम सभी को लक्ष्य प्राप्ति के लिए खड़ा होना ही पड़ेगा , यही नवीन संसद भवन का विचार है। संसद का नयापन राष्ट्र का नयापन है। विश्वगुरु भारत की हुंकार है। नया संसद भवन 21वीं सदी के भारत का भवन है । उन्होंने कहा कि अपने विचारों को अपने स्थानों को अपने संस्थानों को नयापन देना ही होगा। उन्होंने आगे कहा कि हम सब जानते हैं कि भारत लोकतंत्र की जननी है। यहीं लोकतंत्र जन्मा है। उदाहरण देते हुए कहा कि सबसे बड़ी बात यह है कि यह संसद भवन भारत की अपनी थाती को समाहित किए हुए है। जिस तरह से संविधान ने हमें त्याग की प्रेरणा दी हैं वह त्याग , समन्वय और समरसता सब कुछ नए संसद भवन में दिखाई देती है।

महामहिम राज्यपाल ने बताया कि नए संसद भवन के उद्घाटन के समय भारत के हृदय के उद्गार क्या थे वो इस पुस्तक में है। उन्होंने प्रो. के.पी. सिंह जी के विषय ने बात करते हुए कहा कि प्रो. सिंह जी को चुनौतियां लेना ही सबसे अधिक पसंद है और वही इनके जीवन का असली आनंद है । पुस्तकालय विज्ञान अब केवल वो शांत जगह नहीं है और प्रो. के.पी. सिंह जैसे क्रियाशील पुस्तकालय विज्ञानियों ने इसे आधुनिक थियेटर बनाया है। संसद भवन के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि रिकार्ड समय में पूरे होने वाले इस प्रोजेक्ट में सब कुछ अनोखा है। इसमें वास्तुकला का अद्भुत समागम है। भारत के वैदिक समय की छाप से लेकर मौर्य वंश के प्रतीक चिह्न, चोल राजाओं द्वारा बने मंदिरों की छाप से लेकर , भारतीयता को समेटे हुए भित्ति चित्र एवं छायाचित्र सहित सेंगोल की स्थापना तक सब कुछ भारतमय है। एक - एक पत्थर से लेकर भवन का एक एक भित्ति चित्र प्राचीन भारत को आधुनिक भारत से जोड़ता है। हर भारतीय ने इस परिवर्तन को अपने हृदय में संजोया है। यह पुस्तक उसी नए संसद भवन के उत्सव का प्रतिबिंब है। यह केवल भवन नहीं अपितु जीवंत भारत और भारतीयता की आत्मा है। उन्होंने प्रधानमंत्री के उस संबोधन का जिक्र किया जिसको एक गीत में कहा गया था --

नवीन पर्व के लिए नवीन प्राण चाहीए।

मुक्त मातृभूमि को नवीन मान चाहिए।

उन्होंने हर्ष व्यक्त किया कि इस पुस्तक से और नवीन संसद भवन से हमने परतंत्रता की मानसिकता को दूर फेंक कर भारत की वास्तविक स्वतंत्रता को आत्मसात किया है।

कार्यक्रम के अंत में दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आर के भट्ट जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पिंकी शर्मा जी ने किया। कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विज्ञान विभाग से ,विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश कुमार भट्ट, दयाल सिंह कॉलेज की प्राचार्य प्रो. भावना पाण्डेय, श्री अरविंदो कॉलेज प्रोफेसर हंसराज सुमन, पुस्तकालय विज्ञान विभाग प्रो.जे. एन. सिंह , प्रो.मीरा, डॉ.मनीष कुमार, डॉ.पिंकी शर्मा, अटल प्रकाशन संदीप जैन,उन्नत जैन, उपासना काबरा सहित शिक्षाविद, समाजसेवी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

ब्राह्मण धर्मशाला बदायूं में ब्राह्मण महासभा का भव्य आयोजन हुआ।

महामंडलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज ने ब्रह्मण महासभा का ऐतहासिक सम्बोधन किया।

परिवहन विशेष न्यूज

अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण महासभा के तत्वाधान में भगवान परशुराम ब्राह्मण धर्मशाला जोगीपुरा में ब्राह्मण महासभा का आयोजन किया गया।सभा को सम्बोधित करते हुए महामंडलेश्वर स्वामी प्रखर जी महाराज ने कहा कि गायित्री शक्तिपीठ पुष्कर महातीर्थ राजस्थान में 8 मार्च से 19 अप्रैल के मध्य 200 कुंडलीय शत गायित्री पुरषचरण महायज्ञ होना सुनिश्चित हुआ है।यह यज्ञ सिर्फ ब्राह्मण बन्धुओं के सहयोग से सम्पन्न होगा।उन्होंने बताया कि इस महायज्ञ में देश भर से एक करोड़ ब्राह्मण बंधु आहुतियाँ देंगे।उन्होंने ब्राह्मण समाज को एक रहने का संदेश दिया।

स्वामी पूर्णानंद गिरी जी महाराज ने कहा कि ब्राह्मण एकता आज समय की जरूरत है।हम सबको एक होना है।ब्राह्मण महासभा के संयोजक, अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा नेता पं अमन मयंक शर्मा ने कहा कि सरकार को भगवान परशुराम जन्मोत्सव के दिन सरकारी अवकाश घोषित करना चाहिए।अमन मयंक शर्मा ने कहा कि ब्राह्मण नाऽहं कामये राज्यं, न स्वर्गं, न च पुनर्भवम्। कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।ब्राह्मण का कर्तव्य सत्ता या स्वार्थ नहीं, बल्कि समाज को दिशा देना है।

सत्य बोलना, अन्याय का प्रतिकार करना और लोककल्याण के लिए निर्भीक खड़ा होना ही ब्राह्मणत्व है। यही सनातन परंपरा का मूल संदेश है। प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा बनवारी लाल पाठक ने कहा कि सनातन परंपरा में ब्राह्मण को समाज का मार्गदर्शक, विचारक और संतुलनकर्ता माना गया है। जहां ब्राह्मण एकत्र होता है, वहां ज्ञान, विवेक और चिंतन का मंथन होता है, जो हिंदू अस्मिता को सशक्त बनाता है। उसका धर्म समाज को जोड़ना है, विभाजन नहीं'।अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री गौरव पाठक एवं दीपक पाठक ने कहा कि ब्राह्मणो के साथ कोई समस्या हो तो महासभा उनके साथ हमेशा खड़ी है।इस अवसर पर महासभा में पारित हुआ कि जनपद बदायूं में दो लाख के लगभग ब्राह्मण बन्धुओं को आपस में सम्पर्क करने के लिए 1००० की संख्या वाले 20 ब्राह्मण ग्रुप बनाये जाएंगे।जनपद बदायूं के किसी ब्राह्मण को समस्या होने पर उसके निदान के लिए सभी ब्राह्मण बंधु एकत्रित होंगे।

यह भी पारित हुआ कि भगवान परशुराम जन्मोत्सव शोभायात्रा बदायूं, उझानी, बिसौली, उझानी, उसावा में निकल रही है।अब इसे बिल्सी ,दातागंज, सहसवान विधानसभा में भी निकाला जाएगा ।तथा प्रत्येक विधानसभा, ब्लॉक स्तर, नगरपालिका, नगरपंचायत में भगवान परशुराम शोभायात्रा निकाली जायेगी एवं भगवान परशुराम जन्मोत्सव कार्यक्रम प्रत्येक जिला पंचायत एव ग्राम पंचायत क्षेत्र में मनाया जाएगा।इस अवसर पर कौशलानंद पाण्डेय, विपिन शर्मा,डा हरिओम शर्मा, राजीव कुमार शर्मा,तरुण शर्मा, आलोक उपाध्याय, गिरीश शर्मा, गौतम शर्मा,नितिन तिवारी, शिवकान्त शर्मा,अजय शर्मा, आशुतोष शर्मा,मुनेन्द्र शर्मा, गौतम मिश्रा, सुरेश शर्मा,सुरेंद्र उपाध्याय,मोहन शर्मा,दीपक पाठक, गोविंद शर्मा,रचना शंखधार, रजनी मिश्रा, संजीव तिवारी,लक्ष्मी नारायन उपाध्याय,अमन पाठक, सूरज पंडित, हर्ष सारस्वत,प्रियांशु शर्मा, रामोतार मिश्रा,अतुल शर्मा,मनु शर्मा, लक्ष्मी नारायन उपाध्याय, सहित हजारों की संख्या में ब्राह्मण बंधु उपस्थित रहे।

गणतंत्र दिवस हमें अधिकारों के साथ कर्तव्यों की याद दिलाता है : मुसरफ ख़ान, वरिष्ठ समाजसेवी

स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ अपने देश और समाज के प्रति जिम्मेदार होना है : मुसरफ ख़ान

हर वर्ष 26 जनवरी हमें यह स्मरण कराती है कि संविधान ने हमें अधिकार तो दिए हैं, लेकिन उनका सही उपयोग और रक्षा करना हर नागरिक का कर्तव्य है।

"स्वतंत्रता केवल अधिकारों का नाम नहीं है, बल्कि उनके संरक्षण और समाज को बुराइयों से मुक्त करने की सामूहिक जिम्मेदारी भी है।"

उत्तर प्रदेश, संजय सिंह। देशभर में 76वाँ गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास और गौरव के साथ मनाया जा रहा हैं। यह दिन भारतीय लोकतंत्र, संविधान और नागरिक अधिकारों का प्रतीक है। 15 अगस्त 1947 को देश को आज़ादी मिली, लेकिन 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने के साथ भारत एक संपूर्ण गणतंत्र बना।

इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ ख़ान ने कहा कि स्वतंत्रता केवल अधिकारों का नाम नहीं है, बल्कि उनके संरक्षण और समाज को बुराइयों से मुक्त करने की सामूहिक जिम्मेदारी भी है। हर वर्ष 26 जनवरी हमें यह स्मरण कराती है कि संविधान ने हमें अधिकार तो दिए हैं, लेकिन उनका सही उपयोग और रक्षा करना हर नागरिक का कर्तव्य है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "हम तब ही पूरी तरह स्वतंत्र कहलाएंगे, जब देश का अंतिम व्यक्ति भी अभावों, भय और भेदभाव से मुक्त होगा। स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ अपने देश और समाज के प्रति जिम्मेदार होना है।"

स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं, सामाजिक और वैचारिक भी होनी चाहिए

मुसरफ ख़ान ने कहा कि राजनीतिक दृष्टि से भारत एक संप्रभु और लोकतांत्रिक राष्ट्र है। हमारे पास मतदान का अधिकार है और सरकार चुनने की शक्ति है, लेकिन असली प्रश्न सामाजिक और वैचारिक स्वतंत्रता का है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या हम आज भी गरीबी, भ्रष्टाचार, जातिवाद और भेदभाव से पूरी तरह मुक्त हो पाए हैं? मानसिक स्वतंत्रता के नाम पर पश्चिमी संस्कृति की अंधी नकल या संकीर्ण सोच को अपनाना वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है। असली स्वतंत्रता विचारों की स्पष्टता और सकारात्मक सोच में निहित है। उन्होंने आगे कहा कि आज भी समाज में कई कुरीतियाँ मौजूद हैं जो हमारी आज़ादी पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। जब तक हर बच्चा शिक्षा से जुड़ा नहीं होगा, आर्थिक रूप से सशक्त नहीं होगा, तब तक देश की स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। यदि बेटियाँ रात में स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करतीं, तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता अभी भी अधूरी है।

नशा और सामाजिक बुराइयाँ समाज के लिए घातक

वरिष्ठ समाजसेवी ने नशाखोरी, अभद्र टिप्पणी और असामाजिक व्यवहार पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि युवाओं का एक बड़ा वर्ग नशे की गिरफ्त में आ चुका है, जो समाज के लिए गंभीर खतरा है। नशा न केवल युवा पीढ़ी की सोचने-समझने की शक्ति छीन लेता है, बल्कि उसके भविष्य को भी अंधकार में धकेल देता है। उन्होंने समाज से आह्वान किया कि "आइए, हम सभी शपथ लें कि नशीले पदार्थों से दूर रहेंगे, अपने परिवार और समाज को भी इससे बचाएंगे और नशे के विरुद्ध जन-जागरूकता अभियान चलाएंगे।" साथ ही उन्होंने धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों की पवित्रता बनाए रखने की अपील भी की।

अच्छा नागरिक और व्यापारी वही, जो राष्ट्रहित को प्राथमिकता दे। मुसरफ ख़ान ने कहा कि राष्ट्र निर्माण की नींव युवाओं के संस्कार, अनुशासन और आत्मनिर्भर सोच में छिपी है। भारत की प्राचीन परंपराएँ जैसे योग, आयुर्वेद और विज्ञान आज न केवल स्वास्थ्य के क्षेत्र में, बल्कि आर्थिक स्वावलंबन और रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने कहा कि योग और आयुर्वेद आधारित उद्योग वैश्विक स्तर पर भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रहे हैं। "अच्छा नागरिक और अच्छा व्यापारी वही होता है, जो केवल लाभ नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के हित को भी सर्वोपरि रखे।"

युवाओं को संदेश

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने युवाओं से कहा "अपने ख्वाबों पर यकीन रखो, अपनी कामयाबियों पर नाज़ करो। हर नया कदम एक नई शुरुआत है। अगर युवा दिल से ठान लें, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं।"

ख़ामोशियाँ आज मुस्कुरा उठी हैं

विद्या भूषण भारद्वाज

अंधेरी रात के तप के बाद
चेतना की सुरमयी किरणें
मन के आकाश में लहलहा उठी हैं।
ओशो कहते हैं—
"सुबह कोई समय नहीं,
यह भीतर जागने की अवस्था है।"
जब श्वास-श्वास में होश उतर आए,
तभी सच में प्रभात होता है।
राह की पगडंडियों से गुजरती
ये रोशनी
तेरी पलकों को नहीं,
तेरे अहं को सहला रही है—
कह रही है
अब स्वप्नों से बाहर आओ,
यही क्षण ही सत्य है,
यही क्षण ही ईश्वर है।
कृष्ण की बांसुरी की तरह
जीवन को बहने दो,
न रोको, न थामो—
जो है, उसे पूर्णता से जियो।
और राम की मर्यादा की तरह
हर कर्म में
धैर्य, करुणा और धर्म रखो।
आज का दिन
चिंता से नहीं, चेतना से जियो।
आज की सुबह
सिर्फ उजाला नहीं,
आत्म-जागरण है।
आपका दिन मंगलमय,
शांत और अर्थपूर्ण हो

मथुरा आकाशवाणी से डॉ. राधाकांत शर्मा की हिन्दी वार्ता का प्रसारण 23 जनवरी को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) के मथुरा-वृन्दावन केंद्र से नगर के युवा साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार डॉ. राधाकांत शर्मा की हिन्दी वार्ता का प्रसारण 23 जनवरी 2026 को किया जाएगा।इस बारे में जानकारी देते हुए आकाशवाणी मथुरा-वृन्दावन केंद्र के कार्यक्रम निष्पादक डॉक्टर देवेंद्र सारस्वत ने बताया है कि ₹बसंत पंचमी का सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व₹ विषय पर युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा की हिन्दी वार्ता का प्रसारण केंद्र से ₹वनिता लोक₹ कार्यक्रम के अंतर्गत 23 जनवरी 2026 को दोपहर 01:15 बजे किया जाएगा। यह प्रसारण 10 मिनट का होगा। जिसे आप सभी श्रोतागण आकाशवाणी के एफ.एम. चैनल संख्या 102.20 पर श्रवण कर सकते हैं।

निकुंजवासी भक्तिमती पदमा बाई (बुआजी) का अष्टदिवसीय सप्तम पुण्य स्मृति महोत्सव 23 जनवरी से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छटीकरा रोड़ स्थित यशोदानंदन धाम में श्रीराधाकृष्ण प्रेम संस्थान(रजि.) के द्वारा निकुंजवासी भक्तिमती पदमा बाई (बुआजी) का अष्टदिवसीय सप्तम पुण्य स्मृति महोत्सव 23 से 30 जनवरी 2026 पर्यंत विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया गया है। जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत 23 से 30 जनवरी 2026 पर्यंत अपराह्न 02 से सायं 06 बजे तक प्रख्यात भागवताचार्य विपिन बापू महाराज अपनी सरस वाणी में श्रीमद्भागवत कथा का रसास्वादन कराएंगे। डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया कि 27 जनवरी को प्रातः 09 बजे से श्रीहनुमद् आराधन मंडल परिवार द्वारा संगीतमय सामूहिक सुंदरकांड पाठ किया जाएगा।जिसके मनोरथी श्रीमती विमला देवी एवं देवकीनंदन अग्रवाल (मुम्बई) हैं।इसके अलावा 30 जनवरी को हवन-पूर्णाहूति होगी।तत्पश्चात संत-ब्रजवासी- वैष्णव सेवा एवं महाप्रसाद (भंडारा) आदि के कार्यक्रम होंगे। महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती कृष्णा एवं डॉ. सनत कुमार शर्मा (रूपहडिया) ने सभी भक्तों - श्रृद्धालुओं से इस महोत्सव में उपस्थित रहने का आग्रह किया है।

मां नर्मदा के जल की चमक गुप्त ज्ञान के गुरु की तरह है - पंडित राकेश व्यास

परिवहन विशेष न्यूज

महेश्वर मध्य-प्रदेश में मां रेवा आरती समिति द्वारा आयोजित मां नर्मदा महापुराण की कथा के पांचवे दिन कथावाचक पंडित राकेश व्यास ने कहा कि पंच तत्व की काया की शुद्धि हेतु मां रेवा का दर्शन आचमन कथा तथा पूजन अर्चन निमित रूप से करना चाहिए। क्योंकि जगत में भोगों की प्राप्ति होती हैं। रेवा के तट पर भक्ति तथा सतमार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। यह मां नर्मदा के जल की चमक गुप्त ज्ञान के गुरु की तरह है जो दीक्षा तथा शिक्षा हर वर्ग को यही देता है ।एकता समन्वय तथा सद्भाव कभी बिखरने ना पाए ।भक्ति की अलग ज्योति हर मानस पटल पर मां रेवा ही जगमगाती है। प्रातः काल नरेंद्र पंडित आचार्य श्री के सानिध्य में बेटमा निवासी विवेक शर्मा द्वारा मां नर्मदा का पूजन अर्चन कर लंबी चुनरी चढ़ाई गई। श्री शर्मा के परिजन ने ढोल धमाकों के साथ यात्रा निकाली। पंडित राकेश व्यास ने परिक्रमा पथ का महत्व तथा समत्व वह अपनत्व वह ममत्व का संदेश देता है। इससे ज्ञान भक्ति और बैरागी को जन्म देता है। कथा में निमाड़ी सुमधुर गीतों की एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी गई है कार्यक्रम में गीत संगीत मैं वह खूबसूरती के साथ शब्दों को सजाया गया था । कार्यक्रम में समिति के श्री बृजलाल जी सोनेट सुरेश शर्मा पुराणिक तथा अन्य श्रद्धालु भक्त जनों की संख्या अधिक मात्रा में हो रही है, कार्यक्रम के अंत में आरती वह महाप्रसादी के के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

रिपोर्टिंग हरिहर सिंह चौहान

मैक्स हॉस्पिटल, वैशाली ने सहारनपुर में एक्सक्लूसिव ऑन्कोलॉजी ओपीडी की शुरुआत की

नईम सागर

सहारनपुर, जनवरी 21, 2026: मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, वैशाली ने आज सहारनपुर स्थित डॉ. अंकुर उपाध्याय क्लिनिक में अपनी एक्सक्लूसिव ऑन्कोलॉजी ओपीडी सेवाओं की शुरुआत की। इस ओपीडी का उद्घाटन मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, वैशाली के ऑन्कोलॉजी एवं हेड एंड नेक सर्जरी विभाग की सीनियर कंसल्टेंट, डॉ. ख्याति भाटिया की मौजूदगी में किया गया।

डॉ. ख्याति भाटिया प्रत्येक माह के पहले और तीसरे बुधवार को सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक डॉ. अंकुर उपाध्याय क्लिनिक, सहारनपुर में उपलब्ध रहेंगी। इस दौरान मरीज प्राथमिक परामर्श और फॉलो-अप कंसल्टेशन की सुविधा ले सकेंगे।

इस अवसर पर मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, वैशाली के ऑन्कोलॉजी एवं हेड एंड नेक सर्जरी विभाग की सीनियर कंसल्टेंट, डॉ. ख्याति भाटिया, ने कहा, "जागरूकता की कमी के कारण लोग अक्सर शुरुआती लक्षणों को नजरअंदाज कर देते हैं और बीमारी के एडवांस स्टेज में ही इलाज के लिए पहुंचते हैं। कैंसर की रोकथाम, लाइफस्टाइल में बदलाव और सेल्फ-एग्ज़ामिनेशन के बारे में लोगों को जागरूक करना बेहद जरूरी है। ओरल, हेड और नेक कैंसर के इलाज में रोबोटिक प्रोसीजर एक बड़ी सफलता है, जो बिना निशान के इलाज संभव बनाता है। हालांकि, सबसे अहम बात अब भी समय पर डायग्नोसिस है, जो मरीज की जिंदगी में बड़ा फर्क ला सकता है।

इन ओपीडी सेवाओं की शुरुआत के साथ मैक्स हॉस्पिटल, वैशाली ने एडवांस्ड मेडिकल केयर को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है। अब सहारनपुर और आसपास के क्षेत्रों के मरीजों को अनुभवी विशेषज्ञ की सलाह और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी का लाभ अपने शहर में ही मिल सकेगा।

पर्यावरण संरक्षण कोष: जवाबदेही और पारदर्शिता का मॉडल

[कार्बन युग से हरित भविष्य की ओर भारत का बदलाव]

[भारत का हरित बदलाव: कानून, बाजार और जवाबदेही का संगम]

● प्रो. आरके जैन

अब तक पर्यावरण कानूनों के उल्लंघन पर वसूली गई पेनल्टी प्रायः सरकारी खातों में निष्क्रिय पड़ी रह जाती थी। उसके उपयोग की दिशा स्पष्ट नहीं थी और पर्यावरण सुधार से उसका प्रत्यक्ष संबंध भी स्थापित नहीं हो पाता था। नए नियम इसी मूलभूत कमजोरी पर प्रहार करते हैं। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के अंतर्गत बने ये प्रावधान पेनल्टी के उपयोग को 11 स्पष्ट गतिविधियों से जोड़ते हैं। प्रदूषण की रोकथाम, नियंत्रण और शमन से लेकर दूषित स्थलों के पुनर्विकास तक प्रत्येक पहल को ठोस वित्तीय समर्थन मिलता है। इस परिवर्तन ने पर्यावरणीय दंड को मात्र सज़ा नहीं, बल्कि सुधार की सशक्त प्रक्रिया में बदल दिया है।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर भारत ने जनवरी 2026 में ऐसा निर्णायक कदम उठाया, जिसने नीति और मानसिकता दोनों की दिशा बदल दी। अधिसूचित पर्यावरण संरक्षण कोष नियम केवल किसी कानून की औपचारिक घोषणा नहीं हैं, बल्कि उस पुराने टकरावपूर्ण दृष्टिकोण का अंत हैं जिसमें विकास को पर्यावरण का विरोधी मान लिया जाता था। अब प्रदूषण को नज़रअंदाज़ करने या मात्र दंड लगाकर औपचारिकता निभाने की नीति पीछे छूट रही है। भारत ने स्पष्ट और सख़्त संदेश दिया है कि जो पर्यावरण को क्षति पहुँचाएगा, उसे उसकी भरपाई भी करनी होगी। यह नई सोच पर्यावरणीय शासन को नैतिक दायित्व, ठोस जवाबदेही और वास्तविक प्रभावशीलता से जोड़ने का सशक्त प्रयास है।

अब तक पर्यावरण कानूनों के उल्लंघन पर वसूली गई पेनल्टी प्रायः सरकारी खातों में निष्क्रिय पड़ी रह जाती थी। उसके उपयोग की दिशा स्पष्ट नहीं थी और पर्यावरण सुधार से उसका प्रत्यक्ष संबंध भी स्थापित नहीं हो पाता था। नए नियम इसी मूलभूत कमजोरी पर प्रहार करते हैं। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के अंतर्गत बने ये प्रावधान पेनल्टी के उपयोग को 11 स्पष्ट गतिविधियों से जोड़ते हैं। प्रदूषण की रोकथाम, नियंत्रण और शमन से लेकर दूषित स्थलों के पुनर्विकास तक प्रत्येक पहल को ठोस वित्तीय समर्थन मिलता है। इस परिवर्तन ने पर्यावरणीय दंड को मात्र सज़ा नहीं, बल्कि सुधार की सशक्त प्रक्रिया में बदल दिया है।

इन नियमों के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण कोष को सार्वजनिक खाते में रखा जाएगा। इसके प्रभावी संचालन हेतु केंद्र और राज्यों के स्तर पर अलग-अलग परियोजना प्रबंधन इकाइयों का गठन किया गया है। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की निगरानी व्यवस्था पारदर्शिता को संस्थागत रूप देती है। धन के दुरुपयोग की आशंका अब सैद्धांतिक बनकर रह जाती है। कुल राशि का 75 प्रतिशत राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को देकर स्थानीय आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी गई है, जबकि शेष 25 प्रतिशत केंद्र के पास रहकर राष्ट्रीय निगरानी और नीति समन्वय को सुदृढ़ करेगा।

जन विश्वास अधिनियम 2023 ने इस कोष व्यवस्था को अतिरिक्त बल प्रदान किया है। अनेक पर्यावरणीय अपराधों को अपराधमुक्त कर मौद्रिक दंड में परिवर्तित किया गया, जिससे कानूनी प्रक्रिया अधिक सरल और व्यावहारिक बनी। अब अधिक मामलों में जुर्माना लगेगा और वही राशि सीधे पर्यावरण सुधार में व्यय होगी। इससे उद्योगों को स्पष्ट संकेत मिलता है कि उल्लंघन से बचना अब विकल्प नहीं, अनिवार्यता है। यह व्यवस्था भय के स्थान पर जिम्मेदारी आधारित अनुपालन संस्कृति को प्रोत्साहित करती है, जो दीर्घकाल में कहीं अधिक प्रभावी सिद्ध होती है।

कार्बन-हैवी उद्योगों पर केंद्रित कठोरता इस नीति की सबसे निर्णायक विशेषता बनकर उभरती है। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन तीव्रता के लक्ष्य अब कुछ सीमित क्षेत्रों तक सिमटे नहीं रहे। सीमेंट, एल्युमीनियम, क्लोर-अल्कली और कागज उद्योग के साथ अब पेट्रोलियम रिफाइनरी, पेट्रोकेमिकल्स, वस्त्र और सेकेंडरी एल्युमीनियम भी इसके दायरे में हैं। चार सौ साठ से अधिक औद्योगिक इकाइयों पर लागू ये लक्ष्य प्रति टन उत्पादन उत्सर्जन को 3 से 7 प्रतिशत तक घटाने की अनिवार्यता स्थापित करते हैं।

अनुपालन में चूक पर लगाया जाने वाला पर्यावरणीय मुआवजा इस नीति को वास्तविक प्रभाव देता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा निर्धारित दंड उस वर्ष के औसत कार्बन क्रेडिट व्यापार मूल्य से दोगुना होगा। ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी द्वारा जारी कार्बन क्रेडिट प्रमाणपत्र इस पूरी व्यवस्था की आधारशिला हैं। जो इकाइयाँ लक्ष्य से बेहतर प्रदर्शन करेंगी, वे अतिरिक्त क्रेडिट बेचकर आर्थिक लाभ अर्जित करेंगी। इस प्रकार प्रदूषण घाटे का सौदा बनता है और स्वच्छता लाभ का अवसर।

यह बाजार आधारित तंत्र उद्योगों को स्वच्छ प्रौद्योगिकी में निवेश की दिशा में मजबूती से प्रेरित करता है। ऊर्जा दक्षता, नवीकरणीय ऊर्जा और कम-कार्बन प्रक्रियाएं अब केवल पर्यावरणीय जिम्मेदारी नहीं रहीं, बल्कि आर्थिक विवेक का प्रतीक बन गई हैं। जो उद्योग समय रहते बदलाव अपनाएंगे, वे प्रतिस्पर्धा में बढ़त हासिल करेंगे। जो पीछे रहेंगे, उन्हें दंड भुगतना पड़ेगा। इस तरह नीति बाध्यता के माध्यम से नवाचार को गति देती है और हरित संक्रमण को तेज करती है।

इन नियमों का सीधा और स्पष्ट संबंध भारत की अंतरराष्ट्रीय जलवायु प्रतिबद्धताओं से जुड़ता है। नेट-जीरो 2070 का लक्ष्य और 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता में पैंतालीस प्रतिशत कमी की प्रतिज्ञा अब कागज़ी घोषणा नहीं रह गई है। सीमेंट में 3.4 प्रतिशत, एल्युमीनियम में 5.8 प्रतिशत और अन्य क्षेत्रों में 7 प्रतिशत तक निर्धारित लक्ष्य इस बदलाव को रेखांकित करते हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि विकास के नाम पर प्रदूषण की छूट का दौर अब समाप्त हो चुका है।

स्वाभाविक रूप से इन नियमों ने उद्योग और पर्यावरण के बीच बहस को और तीव्र कर दिया है। उद्योग जगत लागत बढ़ने, प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और रोजगार पर संभावित प्रभावों की चिंता जता रहा है। वहीं पर्यावरणविद् जलवायु संकट की गंभीरता, जहरीली होती हवा और जनस्वास्थ्य पर बढ़ते खतरों को सामने रख रहे हैं। सरकार का स्पष्ट मत है कि यह टकराव नहीं, बल्कि संतुलन साधने का प्रयास है। स्वच्छ प्रौद्योगिकी अपनाने हेतु प्रोत्साहन, सब्सिडी और क्रेडिट ट्रेडिंग जैसे उपाय इस संक्रमण को व्यावहारिक और सुगम बनाएंगे।

राज्य स्तर पर उपलब्ध कराई जाने वाली 75 प्रतिशत राशि इस नीति को वास्तविक जमीनी शक्ति प्रदान करती है। इसके माध्यम से वायु गुणवत्ता सुधार, नदी सफाई, औद्योगिक क्लस्टरों की निगरानी और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण की परियोजनाएं प्रभावी रूप से संचालित हो सकेंगी। स्थानीय समस्याओं के समाधान अब स्थानीय स्तर पर संभव होंगे। केंद्र द्वारा संचालित हिस्सा राष्ट्रीय डेटा, मानकों और तकनीकी क्षमता को सुदृढ़ करेगा। यह संघीय सहयोग का ऐसा ढांचा है जिसमें केंद्र दिशा निर्धारित करता है और राज्य क्रियान्वयन की शक्ति बनते हैं।

नए पर्यावरण पेनल्टी नियम जलवायु संघर्ष में भारत का अब तक का सबसे सशक्त हस्तक्षेप सिद्ध हो सकते हैं। यह नीति प्रदूषण करने वालों को जवाबदेह बनाकर प्रकृति को उसका अधिकार लौटाती है। उद्योगों के लिए उत्सर्जन घटाना अब केवल नैतिक आग्रह नहीं, बल्कि आर्थिक और कानूनी अनिवार्यता बन गया है। यदि इन नियमों का ईमानदार और कठोर क्रियान्वयन हुआ, तो भारत न केवल स्वच्छ पर्यावरण हासिल करेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर नेतृत्व की भूमिका भी और मजबूत करेगा। यह पहल आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित, संतुलित और सतत भविष्य की ठोस आधारशिला रखती है।

वर्दी, मर्यादा और विश्वास का संकट

(कर्नाटक डीजीपी प्रकरण के संदर्भ में)

-डॉ. प्रियंका सौरभ

लोकतंत्र में सत्ता का सबसे संवेदनशील और प्रभावशाली चेहरा पुलिस व्यवस्था होती है। पुलिस केवल कानून लागू करने वाली संस्था नहीं, बल्कि राज्य की नैतिक शक्ति का प्रतीक भी है। जब इसी व्यवस्था का कोई शीर्ष अधिकारी गंभीर नैतिक आरोपों में घिरता है, तो सवाल केवल व्यक्ति विशेष तक सीमित नहीं रहते, बल्कि पूरे तंत्र की साख, जवाबदेही और आचरण पर उठ खड़े होते हैं। कर्नाटक के एक वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी और डीजीपी (सिविल राइट्स एन्फोर्समेंट) को कथित आपत्तिजनक वीडियो सामने आने के बाद निलंबित किया जाना इसी गहरे संकट की ओर संकेत करता है।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए कथित वीडियो क्लिप्स ने प्रशासनिक और राजनीतिक हलकों में हलचल पैदा कर दी। राज्य सरकार द्वारा त्वरित निलंबन का निर्णय इस बात का संकेत है कि मामला केवल निजी आचरण तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि सार्वजनिक पद की गरिमा और संस्थागत प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ समझा गया। हालांकि, यह भी उतना ही आवश्यक है कि किसी भी व्यक्ति को कानूनन दोषी ठहराने से पहले निष्पक्ष और पारदर्शी जांच हो। लोकतंत्र का यही संतुलन है—न तो आरोपों को नज़रअंदाज़ करना और न ही जांच से पहले निर्णय सुना देना।

पुलिस वर्दी एक साधारण पोशाक नहीं होती। यह नागरिकों और राज्य के बीच विश्वास का प्रतीक होती है। विशेष रूप से डीजीपी स्तर का अधिकारी केवल आदेश देने वाला प्रशासक नहीं, बल्कि पूरे बल के लिए नैतिक मानक तय करने वाला चेहरा होता है। उसके आचरण से यह संदेश जाता है कि व्यवस्था किस दिशा में खड़ी है।

जब किसी शीर्ष अधिकारी पर ऐसे आरोप लगते हैं, तो आम नागरिक के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि नीति निर्धारण और अनुशासन लागू करने वाले ही मर्यादाओं को लेकर लापरवाह हों, तो व्यवस्था से न्याय की उम्मीद कैसे की जाए? यही वह बिंदु है जहाँ व्यक्तिगत आचरण सार्वजनिक चिंता का विषय बन जाता है।

यह प्रकरण एक और महत्वपूर्ण पहलू को उजागर करता है—सोशल मीडिया का प्रभाव। आज किसी भी कथित वीडियो या सामग्री का कुछ ही घंटों में व्यापक प्रसार हो जाता है। इससे एक ओर पारदर्शिता बढ़ी है, तो दूसरी ओर अफवाह, संपादन और दुरुपयोग का खतरा भी। इसलिए राज्य और जांच एजेंसियों के सामने दोहरी चुनौती होती है—जनभावना का सम्मान करते हुए भी तथ्यों की गहराई से पड़ताल करना।

सोशल मीडिया पर वायरल सामग्री को आधार बनाकर प्रशासनिक कार्रवाई करना एक संवेदनशील निर्णय होता है। कर्नाटक सरकार द्वारा निलंबन का फैसला यह दर्शाता है कि प्रारंभिक स्तर पर ही जवाबदेही तय करने की कोशिश की गई, ताकि जांच निष्पक्ष वातावरण में हो सके। निलंबन स्वयं में दंड नहीं, बल्कि जांच के लिए रास्ता साफ करने की प्रक्रिया है—यह तथ्य समझना भी जरूरी है।

अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि किसी अधिकारी का निजी जीवन उसके काम से अलग होना चाहिए। सिद्धांत रूप में यह बात सही लग सकती है, लेकिन उच्च संवैधानिक या प्रशासनिक पदों पर बैठे लोगों के लिए निजी और सार्वजनिक जीवन के बीच की रेखा बहुत पतली होती है। कारण साफ है—उनका हर आचरण संस्था की छवि से जुड़ जाता है।

यदि कथित कृत्य ऐसे हों जो सार्वजनिक नैतिकता, महिला सम्मान या पद की गरिमा के विपरीत माने जाएँ, तो उन्हें केवल "निजी मामला" कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। विशेषकर तब, जब वे कृत्य सार्वजनिक प्रतीकों, वर्दी या आधिकारिक वातावरण से जुड़े होने का आरोप झेल रहे हों।

इस पूरे प्रकरण में सबसे बड़ा प्रश्न व्यक्ति से आगे जाकर संस्थागत जवाबदेही का है। क्या हमारी प्रशासनिक संरचना में ऐसे तंत्र पर्याप्त रूप से मजबूत हैं, जो समय रहते आचरण संबंधी विचलनों को पहचान सकें? क्या वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आंतरिक आचार संहिता केवल कागज़ों तक सीमित रह गई है?

आईपीएस जैसे प्रतिष्ठित कैडर से समाज अपेक्षा करता है कि वह न केवल कानून लागू करे, बल्कि नैतिक नेतृत्व भी प्रदान करे। यदि किसी एक अधिकारी की कथित चूक पूरे बल की छवि पर प्रश्नचिह्न लगा देती है, तो यह संकेत है कि आंतरिक निगरानी और नैतिक प्रशिक्षण पर नए सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।

किसी भी लोकतांत्रिक राज्य में सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह होता है कि कानून सबके लिए समान है। चाहे वह आम नागरिक हो या सर्वोच्च पद पर बैठा अधिकारी। यदि जांच के बाद आरोप सिद्ध होते हैं, तो कार्रवाई ऐसी होनी चाहिए जो यह स्पष्ट करे कि पद, प्रभाव और पहचान कानून से ऊपर नहीं हैं।

साथ ही, यदि आरोप असत्य या बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किए गए पाए जाते हैं, तो यह भी उतना ही आवश्यक है कि संबंधित अधिकारी की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया जाए। न्याय का अर्थ केवल दंड देना नहीं, बल्कि सत्य की स्थापना भी है।

आम नागरिक पुलिस से केवल सुरक्षा नहीं, बल्कि नैतिक आश्वासन भी चाहता है। वह यह विश्वास करना चाहता है कि जिन हाथों में कानून की बागडोर है, वे स्वयं कानून और मर्यादा के दायरे में हैं। जब ऐसे प्रकरण सामने आते हैं, तो जनता का भरोसा डगमगाता है—और यही किसी भी लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा होता है।

इसलिए सरकारों और संस्थानों की जिम्मेदारी केवल तात्कालिक कार्रवाई तक सीमित नहीं होनी चाहिए। उन्हें यह भी सोचना होगा कि भविष्य में ऐसे मामलों की पुनरावृत्ति न हो—इसके लिए प्रशिक्षण, मनोवैज्ञानिक परामर्श, नैतिक मूल्यांकन और जवाबदेही की स्पष्ट प्रक्रियाएँ विकसित करनी होंगी।

कर्नाटक डीजीपी प्रकरण केवल एक अधिकारी के कथित आचरण का मामला नहीं है। यह उस व्यापक प्रश्न का प्रतीक है कि सत्ता, नैतिकता और जवाबदेही के बीच हमारा संतुलन कितना मजबूत है। निलंबन एक प्रारंभिक कदम है, अंतिम निष्कर्ष नहीं। असली कसौटी निष्पक्ष जांच, पारदर्शी प्रक्रिया और न्यायसंगत निर्णय में होगी।

लोकतंत्र तभी मजबूत होता है जब संस्थाएँ स्वयं को सुधारने का साहस दिखाती हैं। वर्दी की गरिमा, पद की मर्यादा और जनता का विश्वास—इन तीनों की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि कानून बिना भय और पक्षपात के अपना काम करे। यही इस पूरे प्रकरण से निकलने वाला सबसे महत्वपूर्ण संदेश होना चाहिए।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

विज़न 2047 और भ्रष्टाचार - मुक्त भारत का संकल्प

आदर्श और यथार्थ के बीच खड़ा धारा 17-ए का सवाल-ईमानदारी की ढाल या भ्रष्टाचार का हथियार

संजय कुमार बाठला

भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 में वर्ष 2018 में केंद्र सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण संशोधन कर धारा 17-ए जोड़ी गई हैं

आधुनिक लोकतंत्रों में सबसे बड़ा भ्रष्टाचार संभवतः नीतिगत फैसलों टेंडर और ठेके, लाइसेंस और अनुमति, खनन, भूमि बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ, रक्षा और सार्वजनिक खरीद में हैं। यदि इन्हीं फैसलों को जांच से बाहर कर दिया जाए तो भ्रष्टाचार कानून का अस्तित्व ही सीमित हो जाता है

भारत जब अपनी आज़ादी के सौ वर्ष पूरे करने की ओर बढ़ रहा है, तब विज़न 2047 के तहत एक ऐसा राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया गया है जहाँ भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहिष्णुता केवल नारा नहीं, बल्कि शासन का मूल चरित्र हो। लेकिन किसी भी लोकतंत्र में नीतिगत संकल्प तभी सफ़ल होते हैं, जब उन्हें लागू करने वाले कानूनी ढाँचे में विरोधाभास न हों।

आज भारत में यही विरोधाभास भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 17-ए के रूप में सामने खड़ा है, जो एक ओर ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा का दावा करती है तो दूसरी ओर भ्रष्टाचार - मुक्त शासन के लक्ष्य को कमजोर करती प्रतीत होती है।

भ्रष्टाचार किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए केवल आर्थिक नुकसान का कारण नहीं होता, बल्कि यह जनता के विश्वास संस्थाओं की साख और कानून के राज को भीतर से खोखला कर देता है। विश्व बैंक, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल और संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंच बार - बार यह रेखांकित कर चुके हैं कि भ्रष्टाचार सीधे तौर पर गरीबी, असमानता और सामाजिक अशांति को बढ़ाता है।

भारत जैसे विकासशील लोकतंत्र में, जहाँ करोड़ों लोग सरकारी योजनाओं और निर्णयों पर निर्भर हैं, वहाँ भ्रष्टाचार का प्रभाव और भी विनाशकारी हो जाता है।

भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 को इसी पृष्ठभूमि में बनाया गया था। इसका मूल उद्देश्य था

*** लोकसेवकों को जवाबदेह बनाना**

* रिश्वत, पद के दुरुपयोग और सत्ता के दुराचार को आपराधिक कृत्य घोषित करना,

* जनता के संसाधनों और अधिकारों की संवैधानिक रक्षा करना।

इस अधिनियम की आत्मा यह मानकर चलती थी कि लोकसेवक का पद एक ट्रस्ट है, न कि विशेषाधिकार।

वर्ष 2018 में केंद्र सरकार द्वारा इस अधिनियम में एक महत्वपूर्ण संशोधन किया गया, जिसके तहत धारा 17-ए जोड़ी गई। इस धारा के अनुसार, किसी भी लोकसेवक के खिलाफ उनके आधिकारिक कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान लिए गए निर्णयों या की गई सिफारिशों के संबंध में बिना पूर्व अनुमति कोई जांच, पूछताछ या एफआईआर दर्ज नहीं की जा सकती, यह अनुमति संबंधित सरकार या सक्षम प्राधिकारी द्वारा दी जानी होती है।

सरकार का तर्क है कि

* हर दिन अधिकारी ऐसे निर्णय लेते हैं जिनका प्रभाव करोड़ों लोगों पर पड़ता है,

* हर निर्णय सभी को पसंद नहीं आता,

* यदि हर असंतुष्ट व्यक्ति एफआईआर दर्ज करा सके, तो इससे प्रशासन ठप हो जाएगा।

* अधिकारी भय के माहौल में काम करेंगे, जिससे विकास की गति धीमी होगी।

* सरकार के अनुसार, धारा 17-ए ईमानदार अधिकारियों को राजनीतिक प्रतिशोध से बचाने की एक आवश्यक ढाल है।

लेकिन मूल प्रश्नः क्या सुरक्षा के नाम पर जांच पर ताला? यहीं से विवाद शुरू होता है। लोकतंत्र में जांच एजेंसियों की सबसे बड़ी ताकत उनकी स्वतंत्रता होती है। यदि जांच शुरू करने के लिए भी उसी शासन से अनुमति लेनी पड़े, जिसके खिलाफ जांच संभावित है, जिसकी नीतियों और फैसलों में भ्रष्टाचार की आशंका है, तो क्या यह व्यवस्था जांच को निष्पक्ष बना सकती है?

आलोचकों का कहना है कि यह प्रावधान जांच एजेंसियों को नाममात्र की स्वतंत्रता देता है और उन्हें कार्यपालिका के अधीन कर देता है।

नीतिगत भ्रष्टाचारः सबसे बड़ा और सबसे अदृश्य खतरा इसको समझने की करें तो भ्रष्टाचार केवल रिश्वत लेने तक सीमित नहीं है। आधुनिक लोकतंत्रों में सबसे बड़ा भ्रष्टाचार नीतिगत फैसलों में होता है, टेंडर और ठेके, लाइसेंस और अनुमति, खनन, भूमि, बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ, रक्षा और सार्वजनिक खरीद यदि इन्हीं फैसलों को जांच से बाहर कर दिया जाए, तो भ्रष्टाचार कानून का अस्तित्व ही निरर्थक हो जाता है।

राजनीतिक संरक्षण और हितों का टकरावः धारा 17-ए का सबसे बड़ा खतरा यह है कि यह राजनीतिक संरक्षण को संस्थागत रूप दे सकती है। यदि किसी मामले में सरकार स्वयं शामिल हो, या उच्च स्तर पर मिलीभगत हो, तो अनुमति मिलने की संभावना न के बराबर रह जाती है। यह स्थिति हितों के टकराव का क्लासिक उदाहरण है।

सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन ने इस17 ए धारा को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी हैं। याचिका में कहा गया कि यह प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता) और अनुच्छेद 21 (न्यायपूर्ण प्रक्रिया) के खिलाफ है।

* यह भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को कमजोर करता है।

* जांच में देरी से साक्ष्य नष्ट हो सकते हैं, गवाह प्रभावित हो सकते हैं।

* भ्रष्टाचार के मामलों में समय सबसे महत्वपूर्ण तत्व होता है, जैसे-जैसे समय बीतता है

* फाइलें बदली जा सकती हैं

* दस्तावेज गायब हो सकते हैं,

* डिजिटल सबूत मिटाए जा सकते हैं,

* गवाहों पर दबाव डाला जा सकता है।

यदि जांच शुरू होने में ही महीनों लग जाएं, तो सच्चाई तक पहुँचना लगभग असंभव हो जाता है।

शिकायत करने वाले के भीतर डर का माहौल पैदा किया जाता है तो ईमानदार नागरिक भी चुप हो जाता है, इस कानून का एक अप्रत्यक्ष लेकिन गहरा प्रभाव यह भी है कि, ईमानदार अधिकारी, पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता सरकार के खिलाफ़ शिकायत करने से पहले सौ बार सोचने लगते हैं।

यह स्थिति व्हिसलब्लोअर संस्कृति को खत्म कर देती है, जो किसी भी पारदर्शी लोकतंत्र की रीढ़ होती है।

13 जनवरी 2026 को सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने इस मामले में खंडित फैसला, एक माननीय जस्टिस ने धारा 17-ए को असंवैधानिक बताते हुए इसे रद्द करने की राय दी। जबकि दूसरे माननीय जस्टिस ने इसे ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा के लिए आवश्यक मानते हुए वैध ठहराया लेकिन लोकपाल/लोकायुक्त की भूमिका के साथ।

यह विभाजन अपने आप में बताता है कि यह मुद्दा कितना जटिल और संवेदनशील है। जब सुप्रीम कोर्ट के दो न्यायाधीशों की राय अलग-अलग होती है, तो मामला चीफ जस्टिस के पास जाता है। अब यह विषय बड़ी पीठ तय करेगी कि संविधान का कौन-सा पक्ष अधिक मजबूत है और लोकतंत्र की दीर्घकालिक ज़रूरत क्या है।

इन तीन संभावित रास्तों को समझने की करें तो

* पहला, धारा 17-ए को पूरी तरह रद्द कर दिया जाए।

* दूसरा, इसे संशोधित कर सीमित रूप में लागू किया जाए।

* तीसरा, एक नया संतुलित मॉडल विकसित किया जाए, जिसमें, जांच की स्वतंत्रता भी बनी रहे, और ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा भी सुनिश्चित हो।

परवैश्विक दृष्टिकोणः दुनियाँ क्या करती है इसको समझने की करें तो अमेरिका ब्रिटेन, फ्रांस और जापान जैसे देशों में लोकसेवकों के खिलाफ़ जांच के लिए कार्यपालिका की पूर्व अनुमति की शर्त नहीं होती। स्वतंत्र अभियोजन और न्यायिक निगरानी को प्राथमिकता दी जाती है। यही कारण है कि वहाँ नीतिगत भ्रष्टाचार पर भी कार्रवाई संभव हो पाती है।

विजन 2047 और आगे का रास्ता क्या और कैसे होगा भारत वास्तव में विज़न 2047 के तहत भ्रष्टाचार- मुक्त, पारदर्शी और जवाबदेह शासन चाहता है, तो उसे धारा 17-ए जैसी लीकेजेस को बंद करना होगा, जांच एजेंसियों को वास्तविक स्वतंत्रता देनी होगी, और राजनीतिक इच्छा शक्ति को कानूनी ढांचे में बदलना होगा।

विश्लेषण सुरक्षा और जवाबदेही का संतुलन - ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा आवश्यक है, लेकिन सुरक्षा के नाम पर जांच को बंधक बनाना लोकतंत्र के लिए घातक है। भ्रष्टाचार से लड़ाई में कानून को ढाल नहीं, तलवार बनना होगा।

अब निगाहें सुप्रीम कोर्ट की बड़ी पीठ पर हैं, जिसका फैसला न केवल धारा 17-ए का भविष्य तय करेगा, बल्कि यह भी बताएगा कि भारत का लोकतंत्र 2047 की ओर किस दिशा में बढ़ेगा।

ट्रंप युग की नई भू-राजनीति, इंटरनेशनल गैंगस्टर की छवि और भारत-यूरोप की मदर ऑफ ऑल डील्स:-बदलती विश्व व्यवस्था का निर्णायक मोड़-एक समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर 21वीं सदी के तीसरे दशक में वैश्विक राजनीति एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है,जहाँ अंतरराष्ट्रीय नियम, संप्रभुता की अवधारणा और बहुपक्षीय सहयोग की नींव हिलती दिखाई दे रही है।अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा कथित रूप से नया अमेरिकी नक्शा पेश करना,ग्रीनलैंड,ब्रिटेन और वेनेजुएला को लेकर आक्रामक दावे करना और टैरिफ़ युद्ध को हथियार बनान ये सब संकेत देते हैं कि विश्व राजनीति अब कूटनीति से अधिक दबाव और धमकी की भाषा में बात कर रही है। इसी पृष्ठभूमि में भारत और यूरोपीय संघ के बीच प्रस्तावित भारत- ईयू मुक्त व्यापार समझौता एक वैकल्पिक वैश्विक आर्थिक धुरी के रूप में उभरता दिखाई देता है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि,ट्रंप प्रशासन टैरिफ़ को एक रणनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल कर रहें है। पहले चीन,फिर यूरोप और अब सहयोगी देशों पर भी शुल्क बढ़ाने की धमकी,यह नीति वैश्विक व्यापार को अस्थिर कर रही है।यानें अब मित्रों को भी शत्रु बना रही अमेरिकी नीति। यूरोपीय संघ पर 1 फरवरी से 10 प्रतिशत और उसके बाद 25 प्रतिशत तक टैरिफ़ लगाने की चेतावनी ने यूरोप को वैकल्पिक आर्थिक साझेदार खोजने के लिए मजबूर कर दिया है।यही वह क्षण है जहाँ भारत एक विश्वसनीय और स्थिर विकल्प के रूप में उभरता है।ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिका का आक्रामक रुख केवल यूरोप ही नहीं, रूस के लिए भी एक अवसर बन गया है। रूस द्वारा इस मुद्दे को अपनी रणनीति में शामिल करना दर्शाता है कि महाशक्तियाँ अब छोटे क्षेत्रों और संसाधनों पर नियंत्रण के लिए खुलकर प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। यह स्थिति शीत युद्ध के बाद की उस व्यवस्था को चुनौती देती है, जिसमें सीमाएँ अपेक्षाकृत स्थिर मानी जाती थीं।

साथियों बात अगर हम ट्रंप की भू-राजनीतिक सोचः नक्शे बदलने की महत्वाकांक्षा या रणनीतिक दबाव? इसको समझने की करें तो, ट्रंप की विदेश नीति पारंपरिक अमेरिकी कूटनीति से भिन्न रही है। उन्होंने अमेरिका फर्स्ट के नारे को केवल घरेलू नीति तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे वैश्विक व्यवस्था पर थोपने का प्रयास किया। ग्रीनलैंड को खरीदने की पेशकश,वेनेजुएला के संसाधनों पर अप्रत्यक्ष दावे और ब्रिटेन सहित यूरोपीय सहयोगियों पर दबाव ये सभी कदम एक ऐसी सोच को दर्शाते हैं जहाँ भूगोल भी सौदेबाज़ी का हिस्सा बन जाता है। यह सवाल अब गंभीर है कि क्या ट्रंप सचमुच दुनियाँ का भूगोल बदलना चाहते हैं या यह केवल आर्थिक-राजनीतिक दबाव बनाने की रणनीति है।ट्रंप की नीतियों से अब केवल प्रतिद्वंद्वी ही नहीं,बल्कि सहयोगी देश भी असहज महसूस करने लगे हैं। ब्रिटेन की संसद में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी लिबरल डेमोक्रेट के नेता एड डेवी द्वारा ट्रंप को इंटरनेशनल गैंगस्टर और अमेरिका का अब तक का सबसे भ्रष्ट राष्ट्रपति कहना केवल एक बयान नहीं, बल्कि ट्रांस-अटलांटिक रिश्तों में आई दरार का प्रतीक है।यह प्रतिक्रिया दर्शाती है कि अमेरिका -यूरोप संबंध अब विश्वास की बजाय संदेह और असंतोष पर सटीक टिके नज़र आ रहे हैं।

साथियों बात अगर हम भारत- यूरोपीय संघ संबंधों का ऐतिहासिक संदर्भ इसको समझने की करें तो,भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते की चर्चा कोई नई नहीं है। इसकी शुरुआत 2007 में हुई थी,लेकिनटैक्स बौद्धिक संपदा अधिकार, पर्यावरण मानकों और श्रम नियमों जैसे मुद्दों पर मतभेदों के कारण यह 2013 तक लटक गई। 2022 में बातचीत फिर शुरू हुई, पर वैश्विक अनिश्चितताओं के कारण प्रक्रिया धीमी रही। अब 27 जनवरी 2026 को इसके पूर्ण होने की संभावना एक ऐतिहासिक मोड़ मानी जा रही है।यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन द्वारा इस प्रस्तावित समझौते को मदर ऑफ ऑल डील्स कहना इसके महत्व को रेखांकित करता है। दो अरब से अधिक आबादी वाला यह संयुक्त बाजार न केवल व्यापारिक नियमों को सरल बनाएगा,बल्कि वैश्विक जीडीपी का एक नया पावर हाउस भी तैयार करेगा।यूरोप के 27 देशों को फर्स्ट मूवर एडवांटेज मिलने की बात यह दर्शाती है कि ईयू इस समझौते को रणनीतिक दृष्टि से कितना अहम मानता है। भारत के लिए क्यों निर्णायक है यह समझौता?अमेरिकी बाजार में हालिया उतार-चढ़ाव और संभावित मंदी के डर ने भारत के लिए निर्यात जोखिम बढ़ा दिए हैं। ऐसे में यूरोपीय संघ के साथ एक स्थिर और दीर्घकालिक व्यापार साझेदारी भारत के लिए सुरक्षा कवच की तरह काम करेगी। यह समझौता भारत को केवल बाजार नहीं, बल्कि नियम- आधारित व्यापार व्यवस्था में एक मजबूत स्थान भी देगा।

साथियों बात अगर हम इस समझौते से रोज़गार -प्रधान उद्योगों को सबसे बड़ा लाभ मिलने की करें तो,भारत के कपड़ा, रेडीमेड गारमेंट और चमड़ा उद्योग जैसे सेक्टर, जहाँ लाखों लोग काम करते हैं, इस समझौते से सबसे अधिक लाभान्वित होंगे। अभी यूरोप में भारतीय उत्पादों पर 2 से 12 प्रतिशत तक शुल्क लगता है।एफटीए के बाद यह टैक्स घटेगा या समाप्त होगा?,जिससे भारतीय उत्पाद यूरोपीय बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बनेंगे और घरेलू रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलेगा।दवा उद्योग और फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड की भूमिका-भारत को पहले ही दुनियाँ की दवाइयों की दुकान कहा जाता है। यूरोपीय बाजार में जेनेरिक दवाओं की मांग लगातार बढ़ रही है, लेकिन कड़े नियमों के कारण भारतीय कंपनियों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस समझौते के बाद मंजूरी प्रक्रिया सरल होने से भारतीय फार्मा कंपनियों के लिए विशाल अवसर खुलेंगे।केमिकल समुद्री उत्पाद और नए अवसर-केमिकल उद्योग और समुद्री उत्पादों के निर्यात में भी भारत को बड़ा लाभ मिलने की संभावना है।यूरोप जैसे उच्च- मानक बाजार में भारतीय उत्पादों की पहुँच बढ़ना न केवल व्यापार बढ़ाएगा,बल्कि गुणवत्ता सुधार और तकनीकी उन्नयन को भी प्रोत्साहित करेगा।यूरोप के लिए भारत केवल एक बड़ा उपभोक्ता बाजार नहीं, बल्कि एक रणनीतिक साझेदार है जो एशिया में स्थिरता और नियम-आधारित व्यवस्था का समर्थक है। अमेरिका के अनिश्चित रवैये के बीच भारत- ईयू संबंध यूरोप को एक सटीक वैकल्पिक शक्ति संतुलन प्रदान करते हैं। भारतीय उपभोक्ताओं पर प्रभावः सस्ती लग्ज़री? इस समझौते के बाद यूरोप की कार कंपनियाँ,मर्सिडीज,बीएमडब्ल्यू ऑडी भारत में अपेक्षाकृत सस्ती हो सकती हैं। साथ ही, यूरोप से आने वाली शराब और वाइन पर टैक्स कम होने से भारतीय बाजार में उनकी कीमत घट सकती है। यह भारतीय उपभोक्ताओं के लिए एक नया अनुभव होगा, लेकिन घरेलू उद्योगों के लिए प्रतिस्पर्धा भी बढ़ाएगा।

विश्व आर्थिक मंच पर 'महिला-केंद्रित विकास विजन' को साझा किया मयूरभंज की बेटी , झारखंड की बहु ने

कल्पना सोरेन कहा झारखंड का विकास माडल आदिवासी व स्वदेशी लोकाचार पर आधारित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची/ दावोस , जिस माटी की बेटी देश की प्रथम नागरिक के रूप में देश के सर्वोच्च शिखर पर आसिन है वहीं

एक अन्य विश्व आर्थिक मंच पर भारत का परचम झारखंड राज्य की तरफ से लहरा रही है । ये है झारखंड विधानसभा की महिला विधायक सह मुख्यमंत्री की अर्धांगिनी कल्पना सोरेन(मूर्मू) ।

दावोस में चल रही वार्षिक बैठक के दौरान, झारखंड सरकार ने ब्रिक्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (BRICS CCI) के महिला अधिकारिता वर्टिकल के सहयोग से झारखंड पवेलियन में एक उच्च स्तरीय पैनल चर्चा का आयोजन किया। ₹महिला उद्यमिताः विकास को गति देना और एक सतत अर्थव्यवस्था का निर्माण₹ विषय पर आधारित इस सत्र में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को समावेशी विकास और सतत भविष्य के लिए अनिवार्य बताया गया।

उक्त बैठक को संबोधित करते हुए झारखंड मुख्यमंत्री के पत्नी कल्पना मुर्मू सोरेन ने कहा कि झारखंड का विकास मॉडल राज्य के आदिवासी और स्वदेशी लोकाचार पर आधारित है। उन्होंने जोर दिया कि यहां जल, जंगल और जमीन के साथ हमारा संबंध केवल दोहन का नहीं, बल्कि संरक्षण और जिम्मेदारी का है।

श्रीमती सोरेन ने रेखांकित किया कि आदिवासी और ग्रामीण महिलाएं ऐतिहासिक रूप से परिवारों और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को संभालती आई हैं। उनके 'अदृश्य' देखभाल और सामुदायिक श्रम को समाज और अर्थव्यवस्था की नींव के रूप में मान्यता मिलनी चाहिए।

श्रीमती कल्पना मुर्मू सोरेन ने कहा कि झारखंड का दृष्टिकोण केवल कल्याणकारी योजनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि महिलाओं की गरिमा, एजेंसी और अवसरों को बहाल करने पर केंद्रित है। राज्य की नीतियां विशेष रूप से उन महिलाओं (गृहिणियों और अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों) के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई हैं जो अक्सर मुख्यधारा की नजरों से ओझल रहती हैं। सशक्त जड़ें, सशक्त भविष्यः 'जड़ों को सींचने' के रूपक का उपयोग करते हुए उन्होंने कहा कि जब महिलाओं को देखभाल, संसाधन और विश्वास का सहयोग मिलता है, तो विकास अधिक गहरा, स्थिर और न्यायसंगत होता है।

श्रीमती सोरेन ने झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी (JSLPS) के माध्यम से संचालित महिला स्वयं सहायता समूहों की सफलता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे ये समूह स्थानीय उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण और उद्यमों के माध्यम से महिलाओं में नेतृत्व और आत्मनिर्भरता पैदा कर रहे हैं।

श्रीमती सोरेन ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड का शासन ढांचा संसाधनों से ऊपर 'लोगों' को और संकीर्ण आर्थिक उत्पादन से ऊपर 'जीवन की गुणवत्ता' को प्राथमिकता देता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि जब महिलाएं शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से मजबूत होंगी, तो वे न केवल झारखंड बल्कि पूरे देश के सतत विकास की रीढ़ बनेंगी।अंत में उन्होंने वैश्विक भागीदारों को झारखंड के साथ जुड़ने और महिला-नेतृत्व वाले इस सामुदायिक विकास मॉडल का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए आमंत्रित किया।

झारखंड में गिरफ्तार करने वाला 96 घंटे के अंदर हुआ गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची ,गुमला जिले के चैनपुर थाना प्रभारी शैलेश कुमार को पदभार संभालने के महज 96 घंटे के भीतर एसीबी की टीम ने 30 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने रविवार को ही चैनपुर के 22वें थाना प्रभारी के रूप में पदभार ग्रहण किया था, लेकिन बुधवार दोपहर उनका भ्रष्टाचार सामने आ गया। आरोप है कि थाना प्रभारी शैलेश कुमार और पूर्व प्रभारी अशोक कुमार ने पीड़ित जयपाल नायक पर निजी घर के लिए ईंट पकाने के एवज में अवैध वसूली का दबाव बनाया। जयपाल नायक के अनुसार वह एक गरीब व्यक्ति है, लेकिन पुलिस की ओर से लगातार उसे परेशान किया जा रहा था। इससे तंग आकर उसने एसीबी रांची में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के सत्यापन के बाद बुधवार दोपहर 2:05 बजे एसीबी की टीम ने जाल बिछाया और रिश्वत की राशि लेते हुए थाना प्रभारी को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद टीम ने करीब 15 मिनट तक उनके आवास की तलाशी ली और अपराह्न 3:10 बजे उन्हें अपने साथ रांची ले गई।

सरायकेला में जप्त बालू की ऑनलाइन नीलामी से डीएमओ ज्योति शंकर ने राज्य में रचा इतिहास

अनुमानत पौने दो करोड़ रू मुल्य के बालू सवा तीन करोड़ की लगी बोली

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड, - झारखंड

रांची , झारखंड के सरायकेला खरसावां जिले में प्रशासनिक पारदर्शिता, तकनीक आधारित शासन एवं राजस्व संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में झारखंड राज्य में पहली बार सीज (जप्त) बालू की ऑनलाइन नीलामी सफलतापूर्वक संपन्न कराई गई। उक्त नीलामी सरायकेला–खरसावां जिला प्रशासन द्वारा विधिसम्मत एवं पारदर्शी प्रक्रिया के तहत आयोजित की गई, जिसके अंतर्गत कुल लगभग 12 लाख घन फीट सीज बालू की ऑनलाइन नीलामी की गई।

नीलामी हेतु आधार मूल्य 1.72 करोड़ निर्धारित किया गया था, जबकि प्रतिस्पर्धात्मक ऑनलाइन बोली प्रक्रिया के परिणामस्वरूप अंतिम नीलामी मूल्य 2.30 करोड़ प्राप्त हुआ। इस प्रकार, जिला प्रशासन के प्रयासों से राज्य को अपेक्षा से अधिक राजस्व की प्राप्ति सुनिश्चित हुई, जो जिले एवं राज्य दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तीय उपलब्धि है।

इस संबंध में उपायुक्त, सरायकेला–खरसावां नितिश कुमार सिंह ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा जब्त खनिज संसाधनों के निपटान हेतु ऑनलाइन नीलामी जैसी पारदर्शी एवं तकनीक आधारित प्रणाली को अपनाया जाना सुशासन की दिशा में एक प्रभावी कदम है। उन्होंने कहा कि इससे एक ओर अवैध खनन पर प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित होता है, वहीं दूसरी ओर राज्य के लिए अतिरिक्त एवं वैध राजस्व स्रोत भी सृजित होता है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भविष्य में जिले में अवैध खनन के विरुद्ध की गई कार्रवाइयों में जब्त खनिजों के निपटान हेतु इसी प्रकार की पारदर्शी एवं प्रतिस्पर्धात्मक ऑनलाइन प्रक्रिया को प्राथमिकता दी जाएगी, ताकि अधिकतम राजस्व प्राप्ति के साथ-साथ संसाधनों का विधिसम्मत एवं न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चित किया जा सके।

बीमारियाँ और आबादियाँ...!

ना मैं हार रहा और न बीमारियाँ,
ये ज़िन्दगी की हैं कारगुज़ारियाँ।

आएं चाहे जितनी भी दुशवारियां,
मैं हूँ कमज़ोर करूँगा मज़दूरियाँ।

अपनों की उठानी हैं जिम्मेदारियां,
फ़रि चाहे "बिक" जाए सभी कुछ,

मैंने कमाया हैं अब तक जो कुछ।
चाहे तो हो ही जाए ये बरबादियाँ,

मैं अब ये भी सोचता हूँ कैसे होगा,
कब हो पाऊँगा खड़ा प्रश्न हैं बड़ा।

समय विकट है "तनहा" मैं हूँ खड़ा,
मुझे उम्मीद है रब ने सोचा होगा!

वहीं तो लौटाएगा मेरी आबादियाँ।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया पर हमला आप सरकार को बहुत महंगा पड़ेगा - सुनील गोयल डिंपल

संगरूर, (जगसीर सिंह) - पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार, जो हर फ्रंट पर फेल हो चुकी है, लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहे जाने वाले मीडिया पर हमला करके अपना गुस्सा निकाल रही है, जो एक डेमोक्रेटिक स्टेट में किसी भी तरफ से अच्छा नहीं कहा जा सकता। ये शब्द सीनियर भाजेपी नेता सुनील गोयल डिंपल ने कहे। उन्होंने कहा कि हर पॉलिटिकल पार्टी अपनी पॉलिसी मीडिया के जरिए लोगों तक पहुंचाती है और लोग जिसकी पॉलिसी पसंद करते हैं, उसे सत्ता सौंप देते हैं, लेकिन जब वही पॉलिटिकल पार्टी मीडिया को चुप कराने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाती है, तो डेमोक्रेटिक ढांचा टूटता है, जिसके कारण ऐसी अघोषित इमरजेंसी के लिए सरकार को हर तरफ से विरोध का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य की आम आदमी पार्टी सरकार को यह याद रखना चाहिए कि कोई भी सरकार हमेशा सत्ता में नहीं रहती। बीजेपी नेता सुनील गोयल डिंपल ने कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया पर हमला करना आम आदमी पार्टी की राज्य सरकार के लिए महंगा पड़ेगा और राज्य की जनता 2027 के चुनाव में इस सरकार को सत्ता से हटा देगी।

चाइनीज मांझा : सत्य घटना से प्रेरित

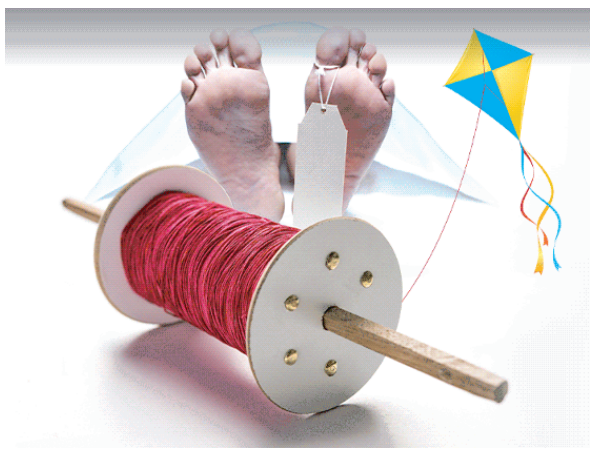

13 और 14 जनवरी की रात 2:00 बजे मैं अपने एक दोस्त के साथ फिल्म देखकर लौट रहा था। अचानक आकाश में है एक ड्रोन उड़ते हुए दिखाई दिया पहले लगा किया कोई फोटोग्राफी वाला ड्रोन है लेकिन जब यह धीरे-धीरे ये केंद्रीय विद्यालय पहल गांव के पास वाले मैदान में उतर रहा था इसमें से कुछ पैकेट्स गिराये गए।

ड्रोन से पैकेट का गिरना हमें संदेहास्पद लगा तब हमने रुक कर देखा कि कुछ लोग ये पैकेट लेकर पास की एक छोटी गली जिसमें एक बड़ा मकान था उसमें दाखिल हो गये ।यह गली आतंकवादियों की शरणास्थली के लिए कुख्यात थी ।हम लोग उनका पीछा करते हुए उस मकान के पिछले वाले हिस्से में पहुंचे देखा कि वहां बहुत सारे हैं लोग मकान की छत पर मीटिंग कर रहे थे। कुछ-कुछ बातें कर रहे थे जो स्पष्ट नहीं थी पर वे *पतंग जिहाद पतंग जिहाद* की बातें कर रहे थे हमने हमारे मोबाइल से पूरी वीडियो रिकॉर्डिंग की इस से हमें स्पष्ट समझ में आया कि यह लोग कौन थे, अनुमान से हमने निश्चित किया यह लोग आतंकवादी हो सकते हैं? तो हम तुरंत वहां से निकले और बाहर आकर पूरी रिकॉर्डिंग सुनी तो मालूम हुआ कि यह लोग पतंग और चाइनीस मांजा कल हिंदू इलाकों में सद्भावना के तौर पर वितरित करेंगे लेकिन उनकी सद्भावना केवल दिखावटी थी वास्तव में ये चीनी माजे से लोगों के गले काटना चाहते थे। 3:30 पर पहलगांव थाने में पहुंचे और पुलिस को पूरी रिकॉर्डिंग दिखाई और

इस साज़िश संबंध में संपूर्ण जानकारी दी और घर पर आकर सो गए दिनांक 14 जनवरी सुबह संक्रांति के दिन आसमान में पतंगें ही पतंगे उड़ रही थीं हम लोगों ने भी कुछ पतंगे मंगाई और उन्हें उड़ानें लगे । उसी समय पुलिस द्वारा माइक पर चाइनीस मांजे के खतरे की उदघोषणा की जा रही थी ।

तभी अचानक हमने मोबाइल पर न्यूज़ चैनल के माध्यम से देखा कि शहर में 5 सात

लोगों की चीनी मांजे से गदर्न कट गई हैं और उन्हें अस्पताल ले गए ले जाया गया जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया ।

शाम होते-होते हमारी कॉलोनी के करीब 10 बच्चे चाइनीस मांजे की चपेट में आ गए और मौत की घाट उतर गए। देर रात खबर आई कि चाइनीस मांजे से 10 हिंदू एवं 20 मुस्लिम बच्चे मारे गए।

इतनी अधिक संख्या में बच्चों के चाइनीस मजे से गले कटने से बहुत अधिक हो हल्ला हो गया और सारे न्यूज़ चैनल वाले कवरेज के लिए आ गए।

लगभग हर चैनल में इसका प्रसारण किया और जैसी कि पुलिस को सूचना थी पुलिस भी आतंकवादियों के साथ सॉफ्ट कॉर्नर रखती है और जब बात इतनी अधिक बढ़ गई तो पुलिस वहां छापा मारने के लिए गई लेकिन आतंकवादी वहां से भाग चुके थे।

हम लोग भी अपने परिजनों को देखने के लिए जब अस्पताल पहुंचे तो वहां पर मुस्लिम बच्चों के अभिभावक छाती पी पीट पीट कर रो रहे थे और दुख प्रकट कर रहे थे एक दो तो वही चक्कर खाकर बेहोश हो गए सब यही कह रहे थे कि हमने अगर आतंकवादियों का साथ ना दिया होता!

तो आज हमारे बच्चे जीवित होते !उन्हें इसका अत्यधिक पश्चात ताप रहा, उन्होंने न्यूज़ चैनल के सामने यह कहा कि इंसान इंसान होता है हम कोई भगवान नहीं है जो हर किसी को मारने का ठेका ले सकते हैं ।इसलिए हम आज से मन ही मन यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अब हम भारत देश में रहने वाले सभी धर्म, जातियों के लोगों को अपना भाई मानेंगे और आगे से हम इस प्रकार के कोई भी आतंकवादी कृत्य का परोक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कभी समर्थन नहीं करेंगे, इसकी सूचना तुरंत पुलिस को देंगे ।

मौलिक एवं अप्रकाशित है
राम वल्लभ गुप्त इंदौरी
इटारसी मध्यप्रदेश

सिंहभूम जिले में डीएमएफटी फंड की बैठक में उपायुक्त चंदन कुमार का रुख कडा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

चाईबासा , पश्चिमी सिंहभूम जिला जहां डीएम एफटी का अलग लालसा नेता एवं अधिकारी, अभियंता पाले रहते हैं । अनेकों इसके लिए ऊंचे दर पर पोस्टिंग लेकर इस जिले में पदस्थापित होते आये हैं । धनबाद जिले में डीएम एफ टी क्रियान्वयन पर आरोप प्रत्यारोप, राजनीतिक बयानबाजी के बाद चाईबासा में भी बैठक का रूख कुछ और दिखाई पड़ा । जहां उपायुक्त चंदन कुमार सख्त दिखे । आज उसी जिले के समाहरणालय स्थित सभागार में जिला दंडाधिकारी -सह- उपायुक्त चंदन कुमार की अध्यक्षता में जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट मद के द्वारा विभिन्न कार्यकारी विभागों के माध्यम से आधारभूत संरचना निर्माण के लिए संचालित योजनाओं में प्रगति से संबंधित समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। उक्त बैठक में उप विकास आयुक्त उत्कर्ष कुमार, निदेशक- लेखा प्रशासन सह स्वनियोजन श्रीमती सुनीला खलको, कार्यकारी विभाग के कार्यपालक अभियंता व सहायक अभियंता सहित अन्य उपस्थित रहे। समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने कहा कि जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट मद से तकरीबन 1712 करोड़ रुपए की राशि विभिन्न संरचना निर्माण हेतु अलग-अलग कार्यकारी विभाग को रिलीज की गई है, जिसमें 1387 करोड़ की राशि व्यय हुई है और इसमें 1273 करोड रुपए की राशि का उपयोगिता प्रमाण पत्र प्राप्त है। इस आलोक में निर्देश दिया गया कि सभी कार्यकारी विभाग लंबित उपयोगिता प्रमाण पत्र से संबंधित योजनाओं का जांच करते हुए तीन दिनों के भीतर उपयोगिता प्रमाण पत्र जमा करना सुनिश्चित करें।

बैठक में समीक्षा के दौरान बताया गया कि विभिन्न कार्यकारी विभागों के पृथक-पृथक खातों में डीएमएफटी मद के तकरीबन 295 करोड़ रुपए की राशि अवशेष है, उक्त के संदर्भ में उपायुक्त के द्वारा निर्देश दिया गया कि सभी सलंग्न कार्यकारी विभाग अपने-अपने खाते में पड़े राशि का मूल्यांकन करते हुए जो राशि एक साल से अधिक समय से खातों में पड़े हैं, उन सभी राशि को नियम अनुसार एक सप्ताह में वापस करने की कार्रवाई सुनिश्चित करें। बैठक में उपायुक्त के द्वारा डीएमएफटी अंतर्गत संचालित पेयजल योजनाओं से संबंधित प्रतिवेदन का समीक्षा करते हुए संलग्न कार्यपालक अभियंता एवं डीएमएफटी पीएमयू दल को निर्देश दिया गया कि संचालित सभी योजनाएं, वर्तमान में किस परिस्थिति में है तथा उनका संचालन व संधारण की राशि का भुगतान हुआ है अथवा नहीं, से संबंधित विस्तृत प्रतिवेदन उपलब्ध करवायें। इसके अलावा वर्ष 2024-25 में विभिन्न कार्यकारी विभागों को आवंटित योजनाओं में टेंडर निष्पादन व एग्रीमेंट का जांच करते हुए संबंधित भौतिक प्रतिवेदन उपलब्ध करवाने के लिए निर्देशित किया गया।

समीक्षा के दौरान उपायुक्त के द्वारा डीएमएफटी मद से वित्तीय वर्ष 2017-18 18-19, 19-20, 20-21, 21-22, 22-23 एवं 2023-24 में स्वीकृत एवं विभिन्न कार्यकारी विभागों को आवंटित योजनाओं में से, लंबित योजनाओं से संबंधित प्रतिवेदन का भी बिंदु वार समीक्षा किया गया। इस दौरान उपायुक्त ने वित्तीय वर्ष 2022-23 तक स्वीकृत, जिन भी योजनाओं में अपेक्षाकृत प्रगति नहीं है और वित्तीय वर्ष 2023-24 में स्वीकृत जिन भी योजनाओं में अब तक कार्य प्रगति शून्य है, उन सभी योजनाओं को रद्द करने का प्रस्ताव उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। इसके अलावा उपायुक्त के द्वारा निर्देशित करते हुए कहा गया कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में अलग-अलग कार्यकारी विभागों को आवंटित योजनाओं में जिस विभाग के द्वारा योजनाओं में अपेक्षित प्रगति प्राप्त किया जाएगा, उसी कार्यकारी विभागों को नई योजनाएं आवंटित की जाएगी।

कर दो उजाला

मोह मद का धागा जुड़ा है मानव मन से
ये मन तो है बड़ा चंचल लोभी मतवाला,
हे माँ शारदा करूँ मैं विनती ज्ञान प्रकाश
भीतर जगाकर अधंकार में कर दो उजाला ।

दिन-रात सपनों के पीछे बस हूँ भागता,
चाहुँ-चाहुँ कितना चाहुँ ये तो नहीं जानता,
जकड़ा हूँ बुरी तरह सुख-दुख के बंधन में,
अबोध अज्ञानी भटका हुआ हूँ ये जानता,
बहाकर पिपासु मन में ज्ञान गंगा निर्मल
पिला दो जीवन ₹आनंद₹ अमृत प्याला ।
तुम हो दयामयी वागवादिनी मातु जगदम्बा,
करूणा की मूरत जगदिश्वरी ललिता अंबा,
फँसा हूँ निकलू कैसे घिरा मैं तो उलझन में,
दिखाओ तुम्ही राह कोई रास्ता बहुत लंबा,
मिटाकर भय शोक चिंता मन कर दो विमल
जगा दो मेरे जीवन में प्रेम संगीत सुरीला ।

मोह मद का धागा जुड़ा है मानव मन से
ये मन तो है बड़ा चंचल लोभी मतवाला,
हे माँ शारदा करूँ मैं विनती ज्ञान प्रकाश
भीतर जगाकर अधंकार में कर दो उजाला ।

- मोनिका डागा आनंद, चेन्नई, तमिलनाडु

एक शाम गौमाता के नाम भजन संध्या में झूमे गोभक्त

जगदीश सीरवी

कापरा बालाजी नगर स्थित श्री आईजी गौशाला में एक शाम गौमाता के नाम जागरण का आयोजित किया गया। प्रेस विज्ञप्ति रामनारायण जाट, ने बताया है आयोजक श्री वीर तेजाजी कर्टन एसोसिएशन मारवाड़ी ग्रुप सिकंदराबाद, हैदराबाद ने राजस्थान से आए भजन गायक बाबूलाल चौधरी, बनवारीलाल शर्मा एंड पार्टी राजस्थान के जागरण का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर गणेश वंदना प्रस्तुति से की गई। उसके बाद गायकों ने राजस्थानी लोक भजनों की प्रस्तुतियां देकर भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया। वीर तेजाजी महाराज के भजन प्रस्तुत किये, भजनों से किया गोमाता की महिमा का बखान किया। देर रात तक बही भक्ति की सरिता के शुभ स्थल पर प्रसादी की व्यवस्था भी की गई थी। आयोजक श्री वीर तेजाजी कर्टन एसोसिएशन मारवाड़ी ग्रुप सिकंदराबाद हैदराबाद द्वारा सभी गौभक्त का सम्मान किया गया। अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कांग्रेस युवा नेता विकास शर्मा, सीरवी समाज बालाजी नगर बेडर सचिव हिरालाल चोयल, अशोक प्रजापत, जगदीश मालवीय,का राजस्थानी साफा पहनाकर सम्मान किया गया। श्री आईजी गौशाला अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, उपाध्यक्ष कालुराम काग, सचिव हुक्माराम सानपुरा,सह सचिव ढगलाराम सेपटा, कोषाध्यक्ष नारायणलाल परिहार, भंगाराम मुलेवा, भंवरलाल मुलेवा, अचलाराम हाम्बड़, सर्व समाज अध्यक्ष एवं सचिव समाज बन्धु को राजस्थानी साफा पहनाकर सम्मान किया गया। लाईव प्रसारण बीआर एस राजस्थानी चैनल भगवानराम राठौड़,बबुल टीम द्वारा किया।श्री वीर तेजाजी कर्टन एसोसिएशन मारवाड़ी ग्रुप सिकंदराबाद हैदराबाद के समस्त गौभक्तो ने दान पुण्य का लाभ लिया। समस्त गोभक्त को श्री आईजी गौशाला अध्यक्ष मंगलाराम पंवार द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्व. मांगीलाल जी सीरवी भूतपूर्व सरपंच जोजावर की प्रथम पुण्यतिथि पर जागरण एवं सेवा के अनेक कार्यक्रम आयोजित

जगदीश सीरवी

हैदराबाद बालाजी नगर जोजावर के भूतपूर्व सरपंच स्व. मांगीलाल जी सीरवी की प्रथम पुण्यतिथि पर अखिल भारतीय सीरवी युवा परिषद के बैनर तले भक्ति संध्या एवं रक्तदान शिविर का आयोजन श्री फुलेश्वर महादेव मंदिर, देवासी समाज बालाजी नगर हैदराबाद में आयोजित किया गया।

भक्ति संध्या में पुष्पा सीरवी सहित अनेक भजन गायको ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए देर रात्रि तक भजनों की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर कार्यक्रम स्थल पर महाप्रसादी का आयोजन भी किया गया जिसमें बड़ी संख्या में भक्त जनों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर ₹रक्तदान महादान₹ की भावना को साकार करते हुए रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लोगों ने बढ़ चढ़कर के भाग लिया। इस शिविर में मातृशक्ति ने भी आगे आकर रक्तदान किया और कुल 70 यूनिट रक्तदान किया गया।

रक्तदान शिविर का आयोजन मारवाड़ी युवा मंच के सुशील भायल, मोहनलाल सैणचा सहित अनेक सदस्यों के सहयोग से किया गया। इसके साथ ही भक्तजनों द्वारा कबूतर चबूतरा बनाने के लिए आर्थिक सहायता की नकद घोषणा की और गौ माता की सेवा हेतु आर्थिक सहायता की नकद घोषणा की गई। इस अवसर पर श्री आई माताजी वडेर बालाजी नगर के अध्यक्ष जयराम पंवार, सचिव हीरालाल, देवासी समाज के अध्यक्ष मांगीलाल देवासी, कुमावत समाज के अध्यक्ष पूनम चंद दहिया, कोरेमुला वडेर के कोषाध्यक्ष पोकरराम पंवार, युवा परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष केसाराम सोलंकी, अशोक कुमार, भीकाराम काग, रताराम सोलंकी, पूनाराम पंवार, भावेश पंवार, प्रवीण परिहार, कैलाश पंवार, अशोक पंवार, हेमाराम, भीमाराम, तिलोक राम, लालाराम काग, भंवरलाल, सांवल राम देवासी, नेमाराम पंवार, लक्ष्मण सहित हजारों लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का लाइव प्रसारण सीरवी रिकॉर्ड युटुब चैनल के माध्यम से किया गया। कार्यक्रम में समाचार संकलन जगदीश सीरवी पत्रकार द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आयोजन हैदराबाद प्रवासी सीरवी समाज जोजावर

द्वारा किया गया। पूरे कार्यक्रम का मंच संचालन पूनाराम सीरवी जोजावर ने अपनी ओजस्वी वाणी से किया और सभी रक्त वीरों एवं दानदाताओं का आभार प्रकट किया गया।

हजारीबाग में भीषण विस्फोट ,दो महिला समेत एक पुरूष की दर्दनाक मौत

जगदीश सीरवी

हैदराबाद किसरा: कुमावत समाज तेलंगाना के मंत्रिमंडल का विस्तार कुमावत समाज किसरा भवन मे सभा की अध्यक्षता सुखराज घोड़ावड़ व सभा के सभापति सोहनलाल मानणिया ने की। सुखराज घोड़वाड़ ने अध्यक्ष तिलायचा सोनाराम कुमावत एवं मंत्रिमंडल को अपनी मातृभाषा हिन्दी मे शपथ दिलाई।इस आयोजन मे तेलंगाना प्रांत की शाखाओं के अध्यक्ष और आजीवन सदस्यों के बीच में यह शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ।मंत्रिमंडल इस प्रकार परामर्श दाता- भंवरलाल आलोदिया, मदनलाल मोटावत, धर्मीचंद रेणवाल, माणकचन्द घोड़ावड़, सोहनलाल मानणिया,सुखराज घोड़ावड, बंशीलाल रेणवाल, ओमप्रकाश हांगर, आसुराम चांदोरा, चैनाराम रेणवाल, अध्यक्ष- तिलायचा सोनाराम कुमावत, सचिव - धर्माराम डेया, कोषाध्यक्ष - सांगर पवन पटेल, प्रचार मंत्री - राकेश हिंदड़,वरिष्ठ उपाध्यक्ष- राजुराम बाकरेचा, नारायण लाल घोड़ावड़, बुधाराम होतवाल, ओमप्रकाश भोबरिया, उपाध्यक्ष- रामकिशोर भलडीवाल, मांगीलाल बावलेचा, सुनील पटेल, सह सचिव- शिंभूराम मोटावत, प्रकाश मालवीया, श्यामलाल बाकरेचा, पप्पुराम मोटावत, पेमाराम मावर, बगदाराम बाकरेचा, नौरतमल होतवाल, सह कोषाध्यक्ष- जयप्रकाश चांदोरा, बाबूलाल घोड़ावड़, रूपाराम मालीवाड़, अणदाराम मनावत, सह प्रचार मंत्री- चैनाराम रेनवाल, राजूराम खेड़ावत,मोहनलाल मावर, माणकचन्द मेड़तिया,

उपस्थिति शाखा कुमावत समाज ज्ञानबाग कॉलोनी अध्यक्ष रूपाराम भोबरिया, कुमावत समाज किसरा अध्यक्ष पप्पूलाल बाकरेचा, कुमावत समाज कालीमंदिर अध्यक्ष पोकरराम गोयल, कुमावत समाज बोराबाडा अध्यक्ष राजूराम बाकरेचा, कुमावत समाज बालाजी नगर अध्यक्ष पूनमचंद डेया, कुमावत समाज संगारेड्डी अध्यक्ष कानाराम दुबलदिया, कुमावत समाज मालकाराम अध्यक्ष गोविन्दराम बाकरेचा, कुमावत समाज कुकड़पल्ली सचिव महेंद्र दुबलदिया, कुमावत समाज चांगिचेराला से ग़ैर मंडली अध्यक्ष नेमाराम मावर, कुमावत समाज बोलाराम से चैनाराम मालवीया एवं बिलाड़ा से पधारे हुवे अतिथि गण और कुमावत समाज तेलंगाना के आजीवन सदस्य उपस्थित थे

उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम उपभोक्ता अधिकार संगठन ने देबरय कॉलेज मे हुआ

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम उपभोक्ता अधिकार संगठन ने BIS (ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स) के सहयोग से स्थानीय उपभोक्ताओं को डिजिटल सुरक्षा/अधिकारों, उपभोक्ता अधिकारों पर सशक्त बनाने के लिए उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया है।

उप-शीर्षकः ओडिशा में बढ़ते ई-कॉमर्स धोखाधड़ी से निपटने के लिए विशेषज्ञ-नेतृत्व वाली कार्यशालाएं, ऑफलाइन/ऑनलाइन खरीद पर जागरूकता । उपभोक्ता अधिकार संगठन ने ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स के सहयोग से देबराय कॉलेज, नयापल्ली, भुवनेश्वर में एक उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्देश्य जनता/छात्रों को उपभोक्ता अधिकारों, गुणवत्ता मानकों और शिकायत निवारण के बारे में शिक्षित करना था।

यह कार्यक्रम, जो 20.01.2026 को देबराय कॉलेज, भुवनेश्वर में आयोजित किया गया था, केवल उपभोक्ताओं को नकली उत्पादों की पहचान करने, ई-कॉमर्स नीतियों, भारतीय मानकों, BIS केयर ऐप को समझने के बारे में शिक्षित करने पर केंद्रित था।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित वरिष्ठ भाजपा नेता श्री जगन्नाथ प्रधान ने कहा, ₹हमारा लक्ष्य एक गुणवत्ता-जागरूक समाज बनाना है जहां उपभोक्ता सूचित विकल्प चुनने और अपने अधिकारों को जानने के लिए सशक्त हों।₹ ₹यह पहल उपभोक्ताओं को [अनुचित प्रथाओं/गलत सूचना] से बचाने और एक निष्पक्ष बाज़ार सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।₹

BIS भारत का राष्ट्रीय मानक निकाय है जो मानकीकरण, अंकन और वस्तुओं के गुणवत्ता प्रमाणन की गतिविधियों के विकास के लिए है, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को कई तरीकों से पता लगाने योग्य और मूर्त लाभ प्रदान करता है, सुरक्षित विश्वसनीय गुणवत्ता वाले सामान प्रदान करता है, उपभोक्ताओं के लिए स्वास्थ्य खतरों को कम करता है।

BIS के विशेषज्ञ श्री स्वप्निल प्रताप, SPO, BIS भुवनेश्वर ने मानकीकरण की सभी प्रक्रियाओं, गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रिया के बारे में बताया और कॉलेज के छात्रों को BIS केयर ऐप का उपयोग दिखाया।

इस अवसर पर SICA (राज्य उपभोक्ता जागरूकता संस्थान), खाद्य आपूर्ति और उपभोक्ता कल्याण विभाग, ओडिशा सरकार के प्रबंधक श्री संजय मोहंती भी उपस्थित थे, उन्होंने छात्रों को उपभोक्ता संरक्षण और उपभोक्ता अधिकारों पर भाषण दिया।

उपभोक्ता अधिकार संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष और संस्थापक, श्री निर्मल चौधरी ने इस बौद्धिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी गणमान्य व्यक्तियों और छात्रों को धन्यवाद दिया।

उपभोक्ता अधिकार संगठन के राज्य अध्यक्ष श्री सोमनाथ पटनायक, जिन्होंने इस कार्यक्रम का आयोजन किया, ने छात्रों के साथ प्रश्नोत्तर सत्र के माध्यम से बातचीत की और उपभोक्ता संरक्षण से संबंधित सभी आवश्यक जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का अभिनंदन किया और इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।जानकी रमन महापात्र ने मंच परिचालना किये थे।

ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट का यू-टर्न; PUCC लेने वालों पर फाइन देना अनिवार्य नहीं है

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पहले फाइन था, अब PUCC लगता है। तो ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ऐसे मनमाने नियम क्यों बना रहा है और अब इसे बहस का मुद्दा क्यों बना रहा है। नियमों ने परेशान लोगों को भरोसा तो दिया है, लेकिन ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के असर पर कई सवाल खड़े हो गए हैं। 'फाइन नहीं तो PUCC' वाला नियम किस आधार पर बनाया गया था? अगर यह मोटर व्हीकल एक्ट के तहत था, तो इसे किस आधार पर हटाया गया? अगर ऐसा नियम हटाना मुमकिन था, तो अब तक लोगों को परेशान क्यों किया जा रहा था? स्टेट ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने पहले यह नियम लागू किया था कि अगर पिछले 90 दिनों का फाइन या ई-चालान नहीं भरा है तो पॉल्यूशन सर्टिफिकेट नहीं मिल पाएगा। लेकिन इससे ड्राइवरों को ऐसी दिक्कतें हो रही थीं जो थीं ही नहीं। खासकर जब तक कोर्ट में गए चालान का फैसला नहीं हुआ, तब तक गाड़ी मालिक और ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट दोनों ही बेबस थे। इस पर लोगों की नाराजगी के बाद सरकार ने कोई जवाब नहीं दिया है। खबर है कि नियमों में ढील दी गई है, हालांकि कोई फॉर्मल नोटिफिकेशन जारी नहीं हुआ है। अब, पॉल्यूशन सर्टिफिकेट के लिए पिछला फाइन देना ज़रूरी नहीं है। ऐसा देखा गया है कि ज़मीन पर बकाया होने के बावजूद PUC सर्टिफिकेट जारी किए जा सकते हैं।

सांसद गुरजीत औजला ने 'दिशा' बैठक में लगाई अफसरों की क्लास, नशा, शिक्षा और जर्जर ढांचे पर विस्तार से चर्चा

अमृतसर 21 जनवरी (साहिल बेरी)

एयरपोर्ट रोड पर धरना देने वालों पर होगा मामला दर्ज

अमृतसर के बचत भवन में आज जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति (DISHA) की एक बैठक सांसद गुरजीत सिंह औजला की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में जिले के विकास कार्यों, कानून व्यवस्था और जनसुविधाओं से जुड़े हर छोटे-बड़े मुद्दे पर अधिकारियों के साथ तीखी चर्चा हुई। वहीं इस दौरान सांसद गुरजीत सिंह औजला ने डीसी दलविंदर जीत सिंह से आग्रह किया कि ऐसी धारा लगाई जाए कि जो लोग एयरपोर्ट रोड पर धरना लगाते हैं, उन पर पर्चा दर्ज हो क्योंकि आए दिन वहां लगने वाले धरने से लोगों की फ्लाइट्स मिस हो जाती हैं। उन्होंने कहा कि अगर कहीं पुलिस से लोगों को शिकायत है और पुलिस काम नहीं कर रही तो उस अधिकारी पर मामला दर्ज हो लेकिन धरना देना किसी भी बात का हल नहीं है।

सांसद औजला ने बैठक के दौरान कई मुद्दों पर सरकार को पत्र लिखकर अवगत करवाने के लिए कहा। उन्होंने सबसे पहले ला एंड आर्डर पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि पुलिस का काम सराहनीय है लेकिन अमृतसर एक सीमावर्ती जिला है, इसलिए यहाँ कानून व्यवस्था के लिए अतिरिक्त पुलिस बल की जरुरत है। उन्होंने कहा कि फिरौती की कॉल्स और सरेआम कारों को निशाना बनाने वाले लुटेरे, नशा और गोलियां चलना अब गंभीर चिंता का विषय है इसीलिए उन्होंने कहा कि इस संबंधी सरकार को पत्र लिखकर अधिक फोर्स की मांग की जाए ताकि इन शैतानों से लड़ा जा सके।

शिक्षा और शिक्षक: ₹नए कालेज खोलें लेकिन पुराना ढांचा भी संभाले

सांसद ने अजनाला में हाल ही में हुए डिग्री कॉलेज के उद्घाटन पर सवाल उठाते हुए कहा कि केवल रिबन काटने से काम नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि अजनाला का सरकारी कॉलेज और आईटीआई (ITI) खस्ताहाल हैं। नई इमारतें बनाने के बजाय पुराने तंत्र को भी मजबूत किया जाए और नए कोर्स शुरू किए जाएं। नया कालेज बनने में अभी कई साल लगेंगे ऐसे में जो बच्चे भी पढ़ रहे हैं उनके लिए पहले से मौजूद कालेजों के सही करें।

उन्होंने इस दौरान सख्त निर्देश दिए कि स्कूलों में अध्यापकों की भारी कमी है, जबकि कई शिक्षक अभी भी इलेक्शन ड्यूटी में फंसे हैं; उन्हें तुरंत मुक्त कर स्कूलों में भेजा जाए।

बुनियादी ढांचा और ट्रैफिक समाधान

शहर के ट्रैफिक और ड्रेनेज को लेकर सांसद ने कई कड़े निर्देश दिए:

मीरा कोट के पास बंद पड़े सुए को सड़क में तब्दील करने का प्रस्ताव दिया गया ताकि ट्रैफिक जाम से राहत मिले। इसके साथ ही पंचायतों को सार्वजनिक जगह से अतिक्रमण हटाने का नोटिस देने को कहा।

सांसद औजला ने लोहारका रोड पर अनावश्यक बैरियर हटाकर डिवाइडर बनाने के निर्देश दिए ताकि जाम की समस्या खत्म हो। वहीं उन्होंने लोगों से भी कहा कि ट्रैफिक सुचारू चले इसके लिए कुछ जिम्मेदारी खुद की भी समझें।

इस दौरान फर्द विभाग की ओर से शिकायत की गई कि उन्हें तकरीबन हर महीने सैलरी लेने के लिए स्ट्राइक करनी पड़ती है। जिस पर निर्देश देते हुए सांसद औजला ने कहा कि चेक करें कि हर बार एक ही कंपनी को ठेका क्यों किया जा रहा है।

सांसद ने 'फर्द केंद्रों' (भूमि रिकॉर्ड) के संचालन पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि 2007 से एक ही कंपनी को बार-बार ठेका दिया जा रहा है। उन्होंने इस मामले की उच्च स्तरीय इन्क्वायरी (Inquiry) की मांग की कि आखिर एक ही कंपनी का एकाधिकार कैसे बना हुआ है और वहां कर्मचारी हर महीने हड़ताल पर क्यों रहते हैं।

इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य, बिजली और अन्य मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। सांसद औजला ने निर्देश दिए कि श्री गुरु नानक देव अस्पताल और अन्य केंद्रों में सुविधाओं के सुधार के लिए सरकार को लिखा जाए।

पावरकॉमः बिजली स्टेशनों की समस्याओं और अधिग्रहण (Acquisition) में हो रही देरी को लेकर सरकार की कार्यप्रणाली पर चर्चा हुई।

मनरेगाः पंचायतों को 125 दिनों का पूरा पेमेंट देने और मनरेगा के प्रस्तावों को लेकर चर्चा की गई।

सांसद औजला ने बताया कि शहर में कूड़े के प्रबंधन और 'सेग्रिगेशन' (Segregation) के काम की डीसी द्वारा निगरानी की जा रही है।

खंडगिरी माघ मेले के लिए संतों ने सुरक्षा की मांग की

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: खंडगिरी माघ मेला 25 तारीख से भुवनेश्वर में शुरू होने जा रहा है। इसलिए, राज्य के बाहर से भी संत खंडगिरी मेले के इंतज़ाम देखने आए हैं और उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके सरकार से उन्हें सुविधाएं और सुरक्षा देने की मांग की है। उन्होंने मांग की है कि वे साही में स्नान करने के लिए चद्रभागा जाएं और मेले में उनकी सुविधाओं और सुरक्षा और पानी और बिजली का इंतज़ाम किया जाए।

खंडगिरी में दस और संत पहुंचे हैं। विश्व सनातन वैदिक धर्म परिषद के मुताबिक, ये सभी उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड से हैं। हालांकि, अभी तक संतों के लिए कोई टेम्परारी रहने की जगह या टेंट नहीं लगाया गया है। इस बारे में संतों ने परिषद में जाकर शिकायत दर्ज कराई। सहमति बनने के बाद, वे उदयगिरी की तलहटी में पादुका आश्रम, खंडगिरी में अनंतगुम्पा, देव भागला और राधाकुंड के साथ-साथ बाहर के कुछ आश्रमों में गए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023